इस्लामी दुनिया का जीता-जागता नंगा चित्र

विष-लता

या

इस्लाम का फ़ोटो

लेखक

मुंशी अब्दुलग़फ़ूर बी. ए.

प्रकाशक -- वैदिक पुस्तकालय, मुरादाबाद

॥ ओ३म् ॥

विषलता

अर्थात

इसलाम का फ़ोटो

लेखक—

श्रीयुत धर्मपाल जी बी० ए०, भूतपूर्व
मु० अब्दुलग़फ़ूर बी० ए० रचित
नख़्ले इसलाम का अनुवाद।

अनुवादक—शिवचरनलाल शर्मा

प्रकाशक—
वैदिक पुस्तकालय, मुरादाबाद।

श्री पं० दुर्गादत्त जी पांडेय द्वारा
शर्म्मा मशीन प्रिन्टिंग प्रेस मुरादाबाद में मुद्रित।

तृतीय बार १००० } सन् १९२८ { मूल्य ।=)

वक्तव्य

प्रिय पाठक! यह पुस्तक 'इसलाम का फोटो' डा० धर्मपाल बी० ए० (जो पहले अबदुलगफूर के नाम से प्रसिद्ध थे) लिखित नख़ले इसलाम का हिन्दी अनुवाद है। इसमें इसलाम का जो फोटो खींचा गया है वह उसी के ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर। हम नहीं चाहते कि किसी के मुर्दों का चाहे वे कैसे ही ज़ालिम, नफ्स परस्त और शैतान हुवे हों कफन उघाड़ कर उनको बेपरदा किया जाय, पर जबतक इसलाम का इतिहास और उसके प्रवर्तकों के खूनी कारनामे उसमें लिखे हुवे मौजूद हैं, हम क्या कोई भी दुनिया की नज़रों से उसकी ख़ौफ़नाक तसवीर को ओझल नहीं कर सकता।

हमारे मुसलमान भाई जो इसलाम का बड़ा अभिमान करते हैं, ज़रा आँखें खोलकर उसकी अन्दरूनी तसवीर का मुताला करें। निष्पक्ष होकर जो लोग इस पुस्तक को देखेंगे, उनपर इसलाम का सारा रहस्य प्रकट होजायगा। इसीलिये हम इसे संशोधन के पश्चात् तीसरी बार पाठकों की भेंट करते हैं।

ओ३म्

विषलता

अर्थात्

इसलाम का फ़ोटो

पहला खण्ड।

कोई देश या जाति एक ही कारण से ऊँची या नीची नहीं होती। उसके घटने और बढ़ने के बहुत से सबब होते हैं। यह घटने और बढ़ने के सबब एक हिंडोले की तरह होते हैं, जिस का एक हिस्सा एक समय में ज़मीन से लगा रहता है और कभी कभी वही नीचे का हिस्सा सबसे ऊँचा हो जाता है। दुनिया में कितने ही देश उठे और गिर गये, कितनी ही जातियाँ बनी और बिगड़ गयीं। कितने ही राज क़ायम हुए और उजड़ गये। पत्थर के थम्भ, बुर्ज और दीवारों के सिवाय कुछ बाक़ी नहीं रहा। चीन की बड़ी लम्बी दीवार

एक बड़े राज का होना बता रही है। मिसरके ऊँचे बुर्ज मिसर की उन्नतिके चिह्न हैं। सिकन्दर के कामोंसे अभी तक यूनानी राज बड़ाई पारहा है।

इङ्गलिस्तान से लेकर हिन्दुस्तान के उत्तर तक, और रूस के उत्तर से अरब के दक्षिण तक के आदमियों को रूम की सेना की याद बाकी है। कारथेज के खण्डहर, यूनानियों के सामने एक बड़े भारी राज की यादगार है। दजला और फ़रात नौशेरवाँ के राज की याद दिलाते हैं। कहाँ तक कहें, मिसर, यूनान, चीन, रूम, कार्थेज, फ़ारस और मेदिया सबके सब अपने अपने बढ़ने और घटने को बता रहे हैं। मगर उन सबके दादा, सबके शिरोमणि, सबसे बड़े और सबके जन्मदाता बूढ़े भारत की बुरी दशा पर हिमालय पहाड़ का रोते रोते सिर सुफ़ेद हो गया। लेकिन उसको इतना दुःख है कि वह घटता ही नहीं। उसके दुःख की आग को गङ्गा, यमुना, सरस्वती और ब्रह्मपुत्र सब मिलकर नहीं बुझा सकतीं। लेकिन इतना दुःख होने पर भी हिमालय चुप है। अगर हिमालय के जुबान होती, तो आज कमसे कम वह अपना पुराना इतिहास तो सुना देता। भारत में कौन कौन से ऋषि मुनि हुए, कौन कौनसे चक्रवर्ती राजे हुए, यह कैसा खुशहाल था, कैसी कैसी लड़ाइयाँ इसमें हुईं, किस किसने इसको लूटा और इसकी सन्तान क्या थी और क्या हो गयी? उसके जुबान होती तो यह सब बातें सुना देता।

हिमालय का सिर दुनियाँ में सबसे ऊँचा है। वह तमाम दुनिया को एक ही दृष्टि से देख रहा है और दुनिया की इस समय की गिरी हुई हालत को देखकर रो रहा है। इसके आँसू भारतवर्ष पर गिर रहे हैं क्योंकि भारतवर्ष इसकी तलैटी में बसा हुआ है। हमें भरोसा है कि एक दिन यह भारत फिर उठेगा, और वह हिमालयकी चोटीसे भी ज़्यादा ऊँचा उठकर संसार में अमन फैलायेगा।

इतिहास की शक्ति।

हम भविष्यवक्ता बनना नहीं चाहते, न हम आगे की बात बताने वाले हैं, क्योंकि हम इस बात को मानते ही नहीं। हाँ, भारत के पास एक ऐसी अच्छी चीज़ है जो लाखों और करोड़ों वर्षों की अगली पिछली बातें बता सकती है—वह भारत का अपना इतिहास है। इसी अच्छी चीज़ या इतिहास के भरोसे हम कह सकते हैं कि भारत फिर हिमालय से ऊँचा उठेगा और संसार में शान्ति फैलायेगा। वह देश जिसका अपना इतिहास नहीं है वह कभी बड़ाई नहीं पा सकता। इतिहास ही एक ऐसी शक्ति है जो मुर्दों में भी जान डाल देती है। किसी देश की दौलत छिन जाने से इतना नुक़सान नहीं होता जितना उसका इतिहास मिटजाने से होता है। मातायें बच्चों को कहानी सुनाया करती हैं कि उस आदमी ने मरी हुई हड्डियों पर अमृत छिड़का और वह जी उठीं। ये कहानियाँ

तो मनघड़न्त होती हैं क्योंकि ऐसा अमृत कहीं नहीं मिलता। हाँ मुरदा जातियों और गिरे हुए देश को इतिहास ही फिर उठाने के लिये अमृत का काम देता है. इस शक्ति को सब संसार मानता है। बहुत दिन नहीं हुए कि लन्दन के कुछ समाचारपत्रों में यह चर्चा छिड़ी थी कि गोरी जातियों का अन्त में क्या हाल होगा अर्थात् उनकी आबादी बढ़ती जाती है: उनके रहने को इतनी ज़मीन कहाँ से आवेगी ? चर्चा छेड़ने वालों ने सारी दुनिया पर निगाह दौड़ायी। उनको एशिया भर में कोई जगह खाली न मिली जहाँ कि वे रहते। क्योंकि यह बात सबने मानली कि एशिया के सब देश अपना अपना इतिहास रखते हैं। चाहे यह इतिहास बुझे हुए ज्वालामुखी पहाड़ की तरह हो न जाने कब जल उठे। इसलिए इनके पहलू में बसने में बड़ा खटका है। अन्त में उनको आस्ट्रेलिया का बड़ा मैदान दिखायी दिया। जहाँ के जङ्गली वाशिन्दे थोड़े से ही हैं और उनका अपना कोई इतिहास भी नहीं है। इनको अमरीका के जङ्गल दिखायी दिये, जहाँ कोई ऐसा ज्वालामुखी पहाड़ नहीं है। इससे भी बड़ा उनको अफ्रीका देश दिखायी दिया जो उत्तर के थोड़े से भाग को छोड़कर सबका सब ख़ाली पड़ा है। चाहे वह आबाद है, लेकिन ऐसे लोगों से आबाद है जिनका अपना कोई इतिहास नहीं और वे कभी सिर नहीं उठा सकते। बहस करने वालोंने इन देशों को गोरी जाति के लिये बहुत अच्छा पाया और यह ठानली कि एशिया के रहने वाले यहाँ न आने पावें क्योंकि एशिया यूरुप का

शत्रु है। इससे जाना जाता है कि इतिहास एक बड़ी शक्ति है जिससे बड़े बड़े राज्य काँप जाते हैं। इस शक्ति की बड़ाई केवल हम लोग या यूरुप के लोग ही नहीं मानते बल्कि पुराने समय से इसकी बड़ाई चली आरही है। यही सबब है, जब कभी किसी जङ्गली जाति ने ऊँची जाति को किसी न किसी तरह दबा लिया तो उसने यही यत्न किया कि उसके इतिहास को मिटादे जिससे कि वह फिर दुबारा सिर उठाने के लायक़ न रहे। इतिहास पुकार पुकार कर कह रहा है कि इसको मिटाने के जगह जगह यत्न किये गये। मुसलमानों ने मिसर को जीता सिकन्दरिया के पुस्तकालय को जलाकर ख़ाक कर दिया, जिसमें लाखों बड़ी बड़ी अच्छी किताबें इकट्ठी की गयी थीं। मुसलमानी मत एक जङ्गली देश में पैदा हुआ, जिसने विद्या को बड़ाई को जाना ही नहीं। जिसका अगर कोई इतिहास था भी तो केवल भेड़ बकरी और ऊँट चराने वालों की कुछ कहानियाँ थीं। यही सबब था कि वे विद्या और हुनर की क़दर ही नहीं जानते थे। इसीलिए यह जहाँ जहाँ गये वहाँ वहाँ उन्होंने किताबोंको मिटाना शुरू कर दिया। उनके विचार में कुरान के सिवाय सब किताबें बेकार थीं। यदि उनकी कुछ आवश्यकता थी तो इसलिए कि उनसे चूल्हा गरम किया जावे। मुसलमानों के सब्ज़ क़दम ने आर्य्यावर्त्त की सब्ज़ी को भी चाट लिया। जो हाल उन्होंने सिकन्दरिया के पुस्तकालय का किया था वही उन्होंने यहाँ की पुस्तकों का भी किया।

जगह जगह पुस्तकालय जलाये गये। रायबहादुर शरच्चन्द्रदास साहब आर्य्यावर्त्त के पुराने महाविद्यालयों का ज़िकर करते हुए लिखते हैं कि बुद्धगया में एक नौमंज़िला पुस्तकालय था, इसी तरह का नौमंज़िला पुस्तकालय नालन्दह में था, जिसमें बुद्धमत की किताबों के सिवाय पुराने समय की और अच्छी अच्छी पुस्तकें थीं। इन दोनों पुस्तकालयों से बढ़कर उदन्नपुरी का पुस्तकालय था। परन्तु सन् १२१२ ई० में बख़्तयार ख़िलजी के समय में, जबकि उसके जनरल मुहम्मद-बिन साम ने उस इलाके को जीता, तो उसने आज्ञा दी कि इन सब किताबों को जला दिया जावे। भारत की लाखों और करोड़ों वर्ष की कमाई इस महाअधम ने एक क्षण में जला डाली। कौन जान सकता है कि इन पुस्तकालयों में कैसे कैसे रत्न भरे थे। शोक! भारत अपने पुरुषाओं की सम्पत्ति को खो बैठा और एक दुनिया इस अमूल्य कोष से फ़ायदा उठाने से महरूम रह गयी। इसी तरह सुलतान अलाउद्दीन ख़िलजी ने अन्हलबाड़ा पट्टन का विख्यात पुस्तकालय भी जला डाला। तारीख़ फ़ीरोज़शाही में लिखा है कि फ़ीरोज़शाह तुग़लक ने कोहाने में संस्कृत पुस्तकों का एक बड़ा पुस्तकालय जलवा दिया। सैयद गुलामहुसैन ने अपनी मशहूर तवारीख़ सैरुल-मुताख़रीन की जिल्द पहली सुफ़ा १५० में लिखा है कि औरङ्ग-ज़ेब जो सिकन्दरसानी (दूसरा सिकन्दर) भी कहा जाता है, एक मुसलमान है, जहाँ और जब कभी उसको हिन्दुओं की

किताबें मिलती हैं: जलवा देना है (१)। ऐसी भयानक फूँका फाँकी में भारत का इतिहास कैसे बच सकता था। इस समय में जबकि भारत में इतिहास की कमी देखी जाती है तो पश्चिम के लोग यही कहते हैं कि भारत का कोई अपना इतिहास नहीं था और यहाँ के निवासी भी आस्ट्रेलिया के जङ्गली और अफ़रीका के हबशियों की ही तरह थे: इतिहास का जानने वाला मशहूर इतिहास लेखक फ़रिश्तः भी यह लिखने से नहीं रुक सका कि, भारतवासी इतिहास लिखना बिलकुल नहीं जानते थे। मिष्टर डब अपनी हिष्ट्री आव इण्डिया में और मिष्टर विलसन अपनी अङ्गरेजी में अनुवाद की हुई राजतरङ्गिणी की भूमिका में इस बात का खण्डन करते हैं कि, 'भारतवर्ष में कोई इतिहास की पुस्तक नहीं थी।' करनल टाडसाहब मुसलमानों के हाथ से पुस्तकालयों की तबाही का ज़िक्र करते हुए लिखते हैं कि "अगर हिन्दुस्थान में इतिहास की किताब न थी तो अबुलफ़ज़ल ने इतिहास लिखने के लिये कहाँ से सामग्री इकट्ठी की? ख़ैर कुछ हो, भारत अपना एक बड़ा इतिहास रखता था। चाहे इस इतिहास को मिटाने के लिये यत्न किये गये और किये जारहे हैं। मुसलमानों ने अपने राज में जो कुछ बुरा बर्ताव किताबों के साथ करना चाहा वह किया; चाहे आजकल ऐसी बातें नहीं की जातीं, फिर भी यत्न

(१) हम हवाला के लिये इस मज़मून में मि० हरबिलास शारदा की किताब हिन्दू सुपीरियारिटी से काम ले रहे है।

यही रहना है कि भारत का प्राचीन इतिहास छुपा ही पड़ा रहे। भारतवासी इससे बेख़बर ही रहें तो अच्छा है। यही सबब है कि हमारे स्कूलों और कालिजों में जो इतिहास पढ़ाये जाते हैं, उनमें पहली बातों को ऐसा घुमाघुमा कर बताया है कि जिससे यही जंचे कि भारत के रहने वाले बिलकुल जङ्गली थे, जो गाय भेड़ चराया करते थे, कुछ बुरी भली खेती भी कर लिया करते थे, बक्र पर छछूड़ों का दाग़ देते थे, गोफ़न फिराना और फन्दा डालना भी जानते थे। बस भारत का इतिहास खतम हो गया। हम यह नहीं कहते कि भारत को लायक बनाने का दावा करने वाले किसी बदनीयती से इसके प्राचीन इतिहास की यूं खिल्ली उड़ा रहे हैं। हम यह कहते हैं कि इस तरह के इतिहास को पढ़कर, भारत के बच्चे प्राचीन गौरव को भूल जायेंगे ऐसा इतिहास पढ़ाने से तो न पढ़ाना ही अच्छा है।

इतिहास की ज़रूरत।

भारतके लिये ऐसे इतिहासकी ज़रूरत नहीं है, जो बताता हो कि भारतवासी हमेशा से ही गिरे चले आते हैं। बल्कि उन बातों को बताने को ज़रूरत है कि भारतवर्ष हिन्दुस्तान बनने से पहले क्या था? भारतवासी हमेशा से हिन्दू ही चले आये हैं, या कभी इनमें आर्य्यत्व भी था? हिन्दू मोजूदा हालत से उठ सकते हैं या नहीं हिन्दुओं की इस समय की

निर्बलता कैसे दूर हो सकती है? प्राचीन समयके फिर वापिस लाने से या केवल कुछ थोड़ासा सुधार कर देने से भारत उठ सकता है? यह थोड़े से प्रश्न हैं, जिनका उत्तर देना इतिहास का काम है। इसमें सन्देह नहीं कि पश्चिमी विचार के फैल जाने से एक हलचल मच गयी है। इस हलचल की पहिली मंजिल ने ग़ज़ब ढाया। क्योंकि गवर्नमेण्ट ने अन्तिम फैसला कर लिया था और उस फैसले की जड़ में लार्ड मैकाले की बुद्धि काम कर रही थी कि हिन्दुस्तानियों को पश्चिमी साइंस पढ़ायी जानी चाहिये और उस पढ़ाई के लिये अच्छी मीडियम (शैली) अङ्गरेज़ी भाषा ही हो सकती है। क्योंकि मैकाले के लिये संस्कृत भाषा ऐसी अधूरी और उसका साहित्य ऐसा तुच्छ था कि वह अङ्गरेजी भाषा की किसी तरह बराबरी नहीं कर सकता था। इस फैसले पर चलते ही भारतवासी न केवल भारतवर्ष के लिये ग़ैर बन गये बल्कि धड़ाधड़ ईसाई होने लगे क्योंकि जो साहित्य इनको पढ़ाया जाता था वह अङ्गरेज़ी भाषा में था। अङ्गरेज़ी भाषा में कोई बुराई नहीं थी, बल्कि बुराई की जड़ इस लिटरेचर में भरे हुए ख़यालात थे। जिनकी तह में ईसाईमत का छुपा हुआ हाथ काम कर रहा था। भारत के विषय में जो कुछ इतिहास की शिक्षा दीजाती थी, उसके लिखने वाले यातो कट्टर ईसाई थे या वे उन ईसाइयों की किताबों से मदद लेते थे, जिनमें प्रायः भारत के प्राचीन इतिहास के विषय में उन्होंने अपनी राय लिखी हैं। ईसाइयों को यह कब अच्छा लगता था कि वे बाइबिल से

अच्छे लिटरेचर का पता लगने दें। इसलिये उन्होंने वेद, उपनिषद् और शास्त्रों के विषय में यही राय दी कि इनमें बच्चों के से विचार हैं और यह जङ्गलियों के बनाये हुए हैं, जो कि नदियों के किनारे रहते और भेड़ बकरी चराया करते थे, जिनका कोई इतिहास नहीं था। स्कूलों में ऐसी पढ़ायी का यह फल हुआ कि भारत के होनहार युवा भारत की हरएक बात को तुच्छ दृष्टि से देखने लगे। यहाँ तक कि राजा राममोहनराय साहब और उनके अनुयायी केशवचन्द्रसैन साहब आदि ने हिन्दुस्तान के धर्म पर ईसाईमत और इसलाम का पैबन्द लगाने का यत्न किया। गो पैबन्द लगा दिया गया, पर उसकी शाखें हरी भरी नहीं हुईं। फिर भी ब्राह्म समाज ने सुधार के सहारे से भारत के कल्याण का मार्ग ढूंढने का यत्न किया, पुनरुद्धार उनके विचार के विरुद्ध था। क्योंकि पश्चिमी विद्वानों के हाथ से लिखी हुई किताबें पढ़ पढ़कर और उनमें प्राचीन समय के बारे में कुछ भी न लिखा देखकर उन लोगों ने पुराने समय को फिर लौटा लाने का ख्याल बिलकुल छोड़ दिया। इसका फल यह हुआ कि सारा बङ्गाल पश्चिमी विचारों, पोशाकों और चीज़ों से सिर से पैर तक डूब गया और बजाय हिन्दुस्तान का हिस्सा मालूम होने के इङ्गलिस्तान का हिस्सा बन गया। लेकिन उसमें जल्दी ही परिवर्त्तन होने वाला था। क्योंकि इधर पञ्जाब, बम्बई और युक्तप्रदेश में इस बात पर बल दिया जाने लगा

कि सुधार की आवश्यकता नहीं किन्तु पुनरुद्धार की ज़रूरत है इसलिए कि हमारा पुराना इतिहास बहुत ही उत्तम है और ऐसा है कि हम उसी के पीछे चलें। हमारे प्राचीन ग्रन्थ ऐसे नहीं हैं जैसे पक्षपाती ईसाई बतारहे हैं, परन्तु उनमें ऐसी ऐसी विद्या की बातें भरी हैं कि जिनमें ईसाईमत या मुसलमानी का पैबन्द लगाया ही नहीं आसकता। वह प्रकाश से भरा हुआ है। ईसाई और मुसलमान उससे बहुत कुछ सीख सकते ह। बस अगर ज़रूरत है तो इस बात की कि हम पुराने समय को फिर ले आवें और पुरानी बड़ाई पर विचार करें। इस बात की खोज करने वाला कौन था यह बताने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि दुनिया उसके नाम को जानती ही है। उधर जबकि बङ्गाल में. जो सबसे पहिले पश्चिमी विचार और सभ्यता में मतवाला होगया था, सुधार की पुकार उठ रही थी, तो दूसरी तरफ पुनरुद्धार का यत्न किया जारहा था। २५ वर्ष के बाद पुनरुद्धार की जीत हुई अर्थात् यही राय ठहरी कि प्राचीन इतिहास को ढूंढकर उस पर चला जाय और पुराने समय को फिर वापिस लाया जावे। दुनिया को दिखा दिया जावे कि भारत अपनी आज़ादी के समय क्या था और अब क्या हो गया? भारत क्यों गिरा, और वह अब कैसे उठेगा? मनुष्य अपनी बीती हुई बातों को सामने रखकर फिर मुस्तैद हो सकता है। वह अपने में एक नया जीवन पालेता है। फिर इस बहुत बड़े बल्कि सब देशों के शिरोमणि

देश की राम कहानी एक मज़ेदार कहानी क्यों न होगी। प्राचीन इतिहास पर निगाह डालने से पहिले हम उन लोगों का हाल कहदें, जो अपनी गिरी हुई हालत में भी ऐसे हैं कि जिनको तमाम दुनिया बड़ाई दे रही है। इसके लिये इससे बढ़कर और क्या बात हो सकती है कि हम उन्हीं लोगों के वाक्य लिखदें जो उन्होंने भारत और उसमें रहने वालों के बारे में लिखे हैं। जिससे इस गिरे हुए ज़माने में भी प्राचीन आर्यत्व का पता लगजावे।

भारतवासी ग़ैरों की नज़र में।

स्ट्रैबो का बयान है कि "भारतवासी ऐसे ईमानदार हैं कि न तो वे घरों में ताले लगाते हैं और न वे लेनदेन में तमस्सुकों को काम में लाते हैं।" अब भी जहाँ मौजूदा सभ्यता नहीं पहुँची है वहाँ अबतक भी पुरानी ईमानदारी मौजूद है। हिन्दुस्तानी शहर चाहे इस बीमारी में फँस चुके हों, परन्तु फिर भी बहुतसी जगहों में पुरानी ईमानदारी और विश्वास मौजूद है। यहाँ पर हमको एक आपबीती कहानी याद आई है जिसे हम यहाँ पर बयान करते हैं। जब हम गत जौलाई मास में अलमोड़े पहुँचे तो हमको एक बँगले में ठहरना पड़ा. बँगले में पहले ही से एक बङ्गाली बाबू रहते थे। बाहर जाते समय बाबू बोले कि बँगले में सब सामान मौजूद है परन्तु ताला लगाने के लिये किवाड़ों में जञ्जीर नहीं है। आप सँरको

जावें तो खुले किवाड़ चले जावें। तहक़ीक़ करने से मालूम हुआ कि उधर के पहाड़ी ईमानदार होते हैं, वे चोरी करना जानते ही नहीं इसलिए ताले की वहाँ ज़रूरत नहीं। जितने ऊपर पहाड़ पर चढ़िये उतनी ही ईमानदारी ज़्यादा मालूम होगी जहाँ पर कि लियाक़तदार आदमियों का क़दम नहीं पहुँचा है। लेकिन ज्यों ज्यों मैदान में आइये उतने ही इसके विरुद्ध चोरी बदमाशी वग़ैरह ज़्यादा पायेंगे। भारत को किस बात ने गिराया, इस बात का ज़िकर हम आगे चलकर करेंगे। इस समय हम प्राचीन लोगों के बारे में निष्पक्ष इतिहास लिखने वालोंकी राय ही पेश करते चले जायँगे। एपिकटीटस का शिष्य एरियन मसीह की दूसरी शताब्दी में भारतवासियों का ज़िकर करते हुए लिखता है कि—"भारतवासियों में कोई भी झूठ नहीं बोलता।" अगर हम इस राय को बिलकुल सच न मानें तो भी यह तो ज़रूर मानना पड़ेगा कि इस समयकी सभ्यता के छल और कपट से वे बिलकुल ख़ाली थे।

ह्यूनसांग चीन का यात्री अपनी यात्रा की पुस्तक में लिखता है कि—"भारतवासी अपनी ईमानदारी और साफ़-दिली में मशहूर हैं, वह किसी के माल को ज़बरदस्ती छीनना बुरा समझते हैं और हर जगह इन्साफ़ ही करते हैं।" इसी तरह खाँगताई जो कि चीन की तरफ से स्याम के राजा के दरबार में दूत नियत होकर आया था, उसने लौटकर यह कहा कि "भारतवासी बड़े ईमानदार और साफ़ कहने वाले

हैं।" यह मसीह की दूसरी सदी का ज़िकर है। यद्यपि भारत इस समय बहुत ही गिर चुका था, परन्तु फिर भी उसमें कुछ आर्यत्व बाकी था। ईसा की चौथी सदी तक जबतक कि मुसलमानों ने अपना बुरा असर इस तरफ़ नहीं डाला था, भारत की हालत बहुत कुछ अच्छी थी। फ्रायरजारडैंस लिखता है कि "भारतवासी बात के बड़े सच्चे और न्याय के पक्के हैं।" छटी शताब्दी में फ़ोटो शाह चीन की तरफ़ से हिन्दुस्तान में एलची बनकर आया था। इसने लिखा है कि 'भारतवासी क़ौल और इक़रार के बड़े पक्के हैं।' और लीसो ने ग्यारहवीं सदी में जो जुग़राफ़िया तैयार किया है, उसमें भारतवासियों का ज़िकर करते हुए, उसने लिखा है कि "भारतवासी स्वभाव से ही न्यायप्रिय हैं। वे किसी तरह भी न्याय को नहीं छोड़ते। वे अपने क़ौल के पक्के हैं और किसी तरह प्रतिज्ञा भङ्ग नहीं करते। वे न्याय के लिये प्रसिद्ध हैं हर-एक देश के लोग उनकी तरफ़ दौड़े चले आते हैं।" मैक्समूलर साहब "इण्डिया एण्ड ह्वाट कैन इट टीच अस" नाम की किताब में शमशुद्दीन अबूअबदुल्ला के वाक्य को नकल करते हैं कि भारतवासी रेतके परमाणुओं की तरह वेशुमार हैं, उनमें धोका और अन्याय नाम को नहीं। उनको न जीने की परवा न मरने का डर है। मारकोपोलो तेरहवीं सदी का प्रसिद्ध यात्री भी अपनी यात्रा की पुस्तक में लिखता है कि—"भारतवर्ष के ब्राह्मण संसार भर में सबसे बढ़िया सौदागर हैं।

वह बड़े ही सच्चे बोलने वाले हैं। दुनिया में किसी चीज़ के बदले वे झूंठ बोलना नहीं चाहते।" (मारकोपोलो ने भारत के बनियों को ब्राह्मण समझा था।) कमालुद्दीन, अब्दुर्रज़ाक, समरकन्दी, जोकि खाक़ान की ओर से महाराज कालीकट व बीजानगर के दरबार में, चौदहवीं सदी में बतौर एलची के आया था इसका भी यही बयान है कि—"हिन्दुस्तान के व्यापारी लोग बड़े ही भरोसे के और सच बोलने वाले हैं।" अबुलफ़ज़ल का बयान है कि—"हिन्दू सत्यप्रिय और अपने तमाम कामों में विश्वास करने योग्य हैं।"

मिष्टर मिल 'हिस्ट्री आव इण्डिया' में जानमैलकम के हवाले से लिखते हैं कि—"भारतवासी सच्चाई के लिए ऐसे ही विख्यात हैं जैसे कि वे अपनी वीरता के लिये।" मैक्समूलर साहब करनल स्लीमन के पते से जोकि बहुत दिनों तक भारत में रहे हैं, लिखते हैं कि—'एक भी गाँव के आदमी बिलकुल झूंठ नहीं बोलते, मेरे पास बहुत से मुकद्दमात आये जिनमें से कि ज़रासा झूंठ बोल देने से, घर बार और तमाम जायदाद बच सकती थी, मगर दोनों ने झूंठ बोल देने से बिलकुल इन्कार कर दिया।" मैक्समूलर साहब पूछते हैं कि क्या अङ्गरेज़ी जज भी कभी ऐसा कर सकते हैं? इसका उत्तर विशेष कर 'नहीं' होगा। मैक्समूलर अपनी इसी किताब में लिखता है कि पुराने या नये समय में जितने भी यात्री हिन्दुस्तान में गये उन सभों ने इस बात की गवाही दी है कि—भारतवासी

बड़े ही सच बोलने वाले और ईमानदार हैं। उनमें से किसी ने भी उनको झूठा नहीं बतलाया। यह राय केवल पुराने यात्रियों ही की नहीं है, बल्कि आजकल के भी हमारे देश के जितने यात्री हिन्दुस्तान गये हैं उनकी भी यही राय है कि भारतवासियों में कोई न कोई बात ऐसी ज़रूर है कि जिससे उनका यह जातीय गुण हो गया है। इसके विरुद्ध विलायती यात्रियों की फ्रांस की सैर का हाल सुनिये तो आपको मालूम हो जायगा कि अङ्गरेज फ्रांस के रहने वालों की ईमानदारी और सच्चाई का बहुत कम ज़िकर करते हैं। इसी तरह फ्रांस वाले भी अङ्गरेजों पर कभी कभी धोकेबाज़ी का ताना मारा करते हैं। शायद मैक्समूलर की आत्मा स्वर्ग में बहुत ही घबड़ाई होगी अबकि उन्होंने लार्ड कर्ज़न को सारे हिन्दुस्तान को झूठा बताते सुना होगा। भारतवासी न केवल अपने सच बोलने ही के लिये प्रसिद्ध थे किन्तु उनमें मनुष्यता के वे सब गुण थे जो मुसलमान और ईसाइयों के साथ मिलने से बहुत कुछ कम हो गये हैं। परन्तु फिर भी बहुत कुछ बाक़ी हैं और ज़्यादातर वहाँ बाक़ी हैं जहाँ पर कि मुसलमान लोग नहीं पहुँचे हैं।

भारतवासी अपनी स्त्रियों का बड़ा मान करते थे। मैगस्थनीज़ के कहने के अनुसार स्त्रियें मर्दों की दृष्टि में बहुत आदरणीय थीं। वह ज़हरीला परदा जोकि मुसलमानों के अन्यायके समय में भारत में जारी हो गया उस समय बिलकुल नहीं था। यह केवल मुसलमानों की शरारत का फल है, जोकि

अबतक चला जाता है। अब भी बहुत से पहाड़ी देशों में और दक्षिण के उन देशों में जहाँ मुसलमानों का गुज़र नहीं हुआ है स्त्रियों में ऐसा परदा नहीं है जैसा कि पञ्जाब और युक्तप्रदेश में है। भारतवासी मैगस्थनीज़के कहे अनुसार मेहनती, साहसी, अदालत में जाने से बचने वाले और शान्ति चाहने वाले थे। टाड साहब अपनी राजस्थान नामी किताब में, अबुलफ़ज़ल की तहरीर का हवाला देते हुए लिखते हैं कि "हिन्दू बड़े धार्मिक, सभ्य, मुरव्वतदार, ख़ातिर करने वाले, विद्या के शौक़ीन, न्यायी और होशियार अर्थात् सब अच्छे गुणों से भरपूर हैं। सब कामों में भरोसे के योग्य, दुःख में धीरज धरने वाले और उनके सिपाही मैदान में मरने मारने वाले हैं। मगर अफ़सोस अकबरके बाद मुसलमानों ने उनकी वफ़ादारी ईमानदारी और सच्चाई से बुरा फ़ायदा उठाया। भारतवासियों पर बेवफ़ाई का कलङ्क लगाया जाता है। लेकिन भारतवासी अपने उपकारी के सदा कृतज्ञ रहे हैं।"

न्हेवर का बयान है कि—"भारतवासियोंसे बढ़कर दुनिया में कोई भी ज़्यादा गम्भीर नहीं है। वह बहुत ही प्रसन्नचित्त, साहसी और शायद तमाम इन्सानों में यही ऐसे हैं जो अपने पड़ोसी को भी दुःख देना नहीं चाहते।" सर मोनियर विलियम अपनी मौडर्न इण्डिया एण्ड इण्डियन्स में लिखते हैं कि "भारतवासी कभी भी जान बूझकर किसी की हत्या नहीं करते। वह किसी अङ्गरेज का चित्त प्रसन्न करने के लिये भी

शिकार नहीं मारते, उनका कहना है कि अपने आप भी जीवित रहो और छोटे जीवों को भी जीता रहने दो।" दुर्भाग्य से सर माउनियर विलियम का समय बहुत कुछ बदल गया है। भारतवासी साहब बहादुरों से सम्बन्ध रखने से बहुत कुछ शिकारी हो गये। मि० एल्फिन्सटन साहब अपनी तवारीख़ में लिखते हैं कि "हिन्दोस्तान के गाँव वाले दयावान्, मिलन-सार, अपने कुनबे और पड़ोसियों के लिये बड़े दयालु, ईमान-दार और सच्चे होते हैं।" मिष्टर मिल अपनी हिस्ट्री आव इण्डिया में लिखते हैं कि—"मिष्टर मरसर ने सन् १८०३ ई० में पार्लियामेण्ट में गवाही देते हुए भारतवासियों के विषय में यह बयान किया था कि वे बड़े नर्म मिज़ाज, सुशील और अपने घरेलू मामलों में बड़े दयालु हैं।" कैपटिन सैडन्हम् साहब का बयान है कि—"जिन जातियों से मुझे वास्ता पड़ा है उन सभी में से भारतवासियों को बड़ा ही आज्ञाकारी, मिलनसार, दयालु, स्वामीभक्त, मित्र, बुद्धिमान् और निज कार्य्यों में सच्चा पाया।"

अबेडूबे का बयान है कि—"भारतवासी निज कार्य्यों को ऐसी अच्छी तरह से करते हैं कि उनसे बढ़कर और कोई किसी तरह से भी नहीं कर सकता। वे इस मामले में इतने बढ़े चढ़े हैं कि यूरुपवासी भी ऐसे नहीं हैं।" सर जानमिल्क का बयान है कि—"वफ़ादारी में भारतवासियों से कोई भी जाति नहीं बढ़ सकती।" सर टामस से सवाल किया कि

अगर हिन्दुस्तान के साथ इङ्गलैण्ड की तिज़ारत का दरवाज़ा खोल दिया जावे तो क्या आपके नज़दीक हिन्दु सभ्यता की उन्नति होगी ? सर टामस ने जवाब दिया कि—"मैं ठीक ठीक नहीं समझा कि भारतवासियों की सभ्यता से आपका क्या मतलब है ? भारतवासी अपने गृहस्थ सम्बन्धी कार्यों में तमाम यूरुप की जातियों से अच्छे हैं और अगर हिन्दुस्तान और इङ्गलैण्ड के बीच तिज़ारत का सम्बन्ध रक्खा जावे तो मैं कहूंगा कि इङ्गलैण्ड हिन्दुस्तान से बहुतसी सभ्यता सीख सकता है।" यह विचार उन अङ्गरेजों के हैं जो ईसाईमत के पक्षपात से अलग थे, जो भारतवासियों को जङ्गली और लार्ड कर्ज़न की तरह झूंठा नहीं समझते थे।

उन्होंने अपनी राय बड़ी सोच समझकर नियत की है। लेकिन अब मामला बदल गया है। इस समय इङ्गलैण्डवासी यत्न कर रहे हैं कि भारतमें विलायती सभ्यता फैलायी जावे। लेकिन अगर हम विलायती सभ्यता को ज़रा ध्यान से देखें तो सब पता लग जायगा कि यह कैसी भयानक चीज़ है। इस बात से तो कोई भी इन्कार नहीं करेगा कि जहाँ जहाँ विलायती सभ्यता पहुँच रही है, वहाँ वहाँ शराब, अफ़यून और मांस का प्रचार बढ़ता जाता है। विशेषकर शराब तो विलायती सभ्यता का एक अङ्ग बन गयी है। जहाँ पुराने समय में इनके बेचने, पीने, बनाने वालों को दण्ड मिलता था, वहाँ यह कैसी शर्म की बात है कि हाल की गवर्नमेण्ट रुपया वसूल करने को शराब, अफ़यून और भङ्ग के ठेके दे रही है।

और गाँव गाँव शहर शहर शराब की दूकानें खोली जारही हैं। एक वृद्ध ने सच कहा है कि अगर आज अङ्गरेजों का राज हिन्दुस्तान से उठ जावे तो वे अपने पीछे अपनी सबसे बड़ी यादगारों में से एक शराबख़ोरी को भी छोड़ेंगे। शराबनोशी ने इस इस देश का बड़ा सत्यानाश किया। मगर कोई क्या कर सकता है? जबकि ख़ुद गवर्नमेंएट ही शराब या शराब भरे पानी को बिकवा रही है। मिष्टर फ्रेडरिकग्रब साहब ने माडर्न रिव्यू में मदिरापान पर एक लेख लिखा है, जिसमें गवर्नमेंएट की रिपोर्ट के अनुसार दिखाया गया है कि—सन् १९०२-३ में शराब, भङ्ग और अफ़ीम आदि की कुल दूकानें हिन्दुस्तान में ११८४७२ थी। मगर सन् १९०३-४ में उनकी संख्या १२०८७५ होगयी; अर्थात् एक ही सालमें २४०३ दूकानें अधिक हो गयीं। जिस देश में इतनी हज़ार दूकानें हर साल गवर्नमेंएट की तरफ़ से खोली जारही हों, वह कबतक जीता रह सकता है। मगर गवर्नमेंएट यह सब कुछ क्यों कर रही है? इसलिए कि उसको रुपये की आवश्यकता है और उसको इस घिनाने पेशे से सन् १९०२-३ में ७१११५००० रुपया मिला। परन्तु यह आमदनी एक ही साल में ७५३६५००० हो गयी। अर्थात् एक ही साल में साढ़े बयालीस लाख की रक़म ज़्यादा कमायी, इससे ३० साल पहले गवर्नमेंएट को शराब से सिर्फ़ ढाई करोड़ के क़रीब आमदनी थी। इससे साफ़ ज़ाहिर है कि इङ्गलैण्ड हिन्दुस्तान को कितना सभ्य बना रहा है। शायद यूरुप की उन्नति का मार्ग मदिरापान ही है। परन्तु हमारी

समझ में हिन्दुस्तान का ३० वर्ष के अन्दर पहले से ५ करोड़ से ज़्यादा मदिरापान में उठ जाना निहायत ही शर्म की बात है। हमारे यहाँ कलालों को अभी तक घृणा की दृष्टि से देखा जाता है। क्योंकि यह लोग कभी शराब बेचने का पेशा करते थे। मगर गवर्नमेण्ट ने इन सबको मात कर दिया। मिष्टर ब्रग आगे चलकर लिखते हैं कि हिन्दुस्तान के पहले गवर्नर जनरल वारिन् होष्टिंग्स ने पार्लियामेण्ट के सामने अपने मुक-द्दमे में बयान देते समय सन् १८१३ ई० में हिन्दुओं के बारे में यह राय दी थी कि वे बड़े भलेमानुष, दयालु, थोड़ीसी दया पर कृतज्ञ होने वाले और अन्याय को भूल जाने वाले हैं। बिशपहेबर का बयान है कि "जो मनुष्य यह कहता है कि भारतवासी सभ्य लोगों से किसी बात में भी कम हैं; उसे कभी उनके पास रहने का मौका नहीं मिला। ये स्वाभाविक दयालु चित्त, प्रसन्न, मुरव्वतदार, ज़हीन, परहेज़गार और थोड़ा ख़र्च करने वाले हैं। अपने कारोबार में मेहनती हैं। वे बहादुर और साहसी हैं, विद्याप्रिय हैं, गणित और ज्योतिष आदि विद्याओं के बड़े प्रेमी हैं, नक्कारी और पत्थर के काम में विशेष अभ्यासी हैं। अपने माता पिता के आज्ञाकारी हैं, बच्चों के साथ प्यार करते हैं।" मैक्समूलर साहब अपनी 'इण्डिया एण्ड व्हाट कैन इट टीच अस' किताब में हिन्दुओं की सहन-शक्ति का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि—"जब मैं उन तमाम भयानक अन्यायों और कठोरताओं को पढ़ता हूं जोकि मुसल-मानों ने हिन्दुओं पर की थीं, तो मैं आश्चर्य में हूं कि ऐसे

अन्यायी लोगों के आधीन रहकर, हिन्दू भी स्वयं शैतान क्यों नहीं बन गये, और उनमें इस क़द्र सच्चाई और दियानत-दारी जोकि अबतक हम देख रहे हैं, कैसे बाक़ी रह गयी ?" प्रोफ़ेसर मैक्समूलरका आश्चर्य ठीक है और बिलकुल ठीक है। भारतवासियों की सभ्यता का नाश किया तो मुसलमानों ने, भारतवासियों का अगर हिन्दू बनाया तो अधिकतर मुसलमानों ने, क्योंकि मुसलमानों के आने के समय तक जो जो यात्री आर्य्यावर्त्त में आये उनकी राय से विदित होता है कि आर्य्यावर्त्त इन सब दोषों से रहित था। यह सब दोष अधिकतः मुसलमानों के ही कारण उनमें आये। भारतवासियों ने यदि मक्कारी, झूँठ, फ़रेब, मारकाट, धोकेबाज़ी, मदिरापान, मांससेवन और व्यभिचार आदि बुरी आदतें सीखीं तो वह ज़्यादातर मुसलमानों से और किसी क़द्र यूरुपवासियों से। हम इस विषय पर ऐतिहासिक चर्चा दूसरे लेख में करेंगे।

दूसरा खण्ड।

मुसलमानों के अन्याय का आरम्भ।

हम अपने पिछले लेख में मैक्समूलर के आश्चर्य का ज़िकर कर चुके हैं कि मुसलमानों के ऐसे अन्याय और कठोरता होने पर हिन्दू स्वयं भी शैतान क्यों नहीं बनगये ? आज हम बड़े खेद के साथ इस विषय पर लेखनी उठाते हैं। खेद के साथ इसलिये कि, जितने अन्याय मुसलमान बादशाहों ने न केवल

भारतवासियों पर ही किये हैं, बल्कि अपने जातिवालों पर भी किये हैं, वह ऐसे हैं जिनकी उपमा संसार में नहीं मिल सकती। इन सब दुःखपूर्ण कहानियों का वर्णन भी रंज से खाली नहीं है। विशेषकर उस समय जबकि हमको इतिहास बताता है कि मुसलमान बादशाहों ने भारतवासियों के सामने अपने चालचलन की कोई भी ऐसी अच्छी मिसाल नहीं रक्खी जिसको भारतवासी आदर्श बनाते, या जो उनके चालचलनको उभारनेवाली होती। यदि इतिहास सच्चा है तो इस बातको झूंठ नहीं मान सकते कि मुसलमान बादशाहों ने भारतको नीचे ही गिराया और अपनी कुचेष्टाओं से अकथनीय निन्दितकर्म किये। इन सबकी जड़ इस्लामकी मत सम्बन्धी शिक्षा है जो कभी भी उनको कुकर्म करने से रोकना नहीं जानती। यदि हम मुसलमान बादशाहों की उन तमाम धोकेबाज़ियों, कपटों, छलों और मारकाट के लिये, इसलाम की मत सम्बन्धी शिक्षा को ही उत्तरदाता ठहरायें तो बेजा नहीं होगा। क्योंकि कुरान में ऐसी शिक्षा मिलती है, जिसके अनुसार छल, कपट, मारकाट और झूंठी कसम खाने में कोई दोष नहीं। बल्कि कहीं कहीं पहले पैगम्बरों का दृष्टान्त देकर इन बातों को ठीक सिद्ध किया गया है। मुसलमानी बादशाहों ने कामातुरता में सबको परास्त कर दिया है। इसका कारण भी उनका मत प्रचालक और कुरान ही है। कुरान जहाँ विवाहों की संख्या बताता है वहाँ वह "बमा मलकत ईमानकुम" की शिक्षा देकर इस बात की कोई हद नहीं करता

कि दासियों की संख्या कितनी हो। दासियों को दाँये हाथ का माल कहकर, कुरान ने अनाचार फैलाने में कोई कसर बाकी नहीं रक्खी। कुरान से ही इस बात का प्रमाण मिलता है कि उसका प्रवर्त्तक स्वयं दासियों के कारण ही बदनाम हुआ। इस बदनामी को छिपाने के लिये "तहरीम" कुरान में गढ़ी गयी। सूरते तहरीम ही इस अनाचार का कारण है। जब कभी बहु-विवाह के नियम पर वा मुहम्मद साहब के बहुतसी स्त्रियें रखने पर आक्षेप किया गया है तो मुसलमान यही उत्तर देते हैं कि मुहम्मद साहब को खुदा ने सौ मर्दों की शक्ति दे रक्खी थी। परन्तु जिस बातको वे अच्छी समझते थे, वह समाज को रसातल पहुँचाने वाली और सारी बुराइयों का कारण है। क्योंकि इस ही से सारे पाप हो रहे है और हुए। क्या यही बात नहीं थी जिसने इस शख़्श को अपने नेपालक बेटे की स्त्री पर गिराया और ऐसा बुरा दृष्टान्त बनाया। हम चाहते हैं कि मुहम्मद को एक महान् पुरुष साबित करें। हम यह भी चाहते हैं कि उनके लिये हमारे दिल में एक सच्ची इज़्ज़त पैदा हो। लेकिन कुराम हमको ऐसा करने से रोकता है। क्योंकि कुरान में जो उसकी तसवीर खैंची गयी है वह कुछ चित्ताकर्षक नहीं है। अगर हम कुरान को भी छोड़दें तो हदीसों या दूसरे इतिहासों को झूँठ कैसे समझें। कुरान और हदीसके लेखानुसार सब ही मुसलमानी मत से भिन्न ऐतिहासिक जन कोई भी इस बात को अच्छा नहीं समझ सकता। अभी अभी सन् १६०७ ई० में गवर्नमेण्ट

आव इण्डिया की ख़ास मंजूरी से रायल एशियाटिक सोसाइटी ने मुग़लिया बादशाहों की तवारीख़ (इतिहास) का दो बड़ी बड़ी जिल्दों में तर्जुमा छापा है। जिसका रचयिता एक वेनिस का यात्री "मिस्टर निकोलाओ" है। जोकि शाहजहाँ के समय से औरङ्गज़ेब के समय तक हिन्दुस्तान में रहा था। इस इतिहास लिखने वाले ने शाहजहाँ के समय से औरङ्गज़ेब तक के समय के स्वयं देखे हुए वृत्तान्त लिखे हैं। यह पुस्तक इस्लामी दुनिया के लिये बिलकुल नयी है। शाहजहाँ और औरङ्गज़ेबके राज्य समय का हाल इस पुस्तक से अधिक और कहीं नहीं मिल सकता। शाहजहाँ के चालचलन का हाल बताते हुए, लेखक ने मुहम्मद साहब का भी चालचलन पेश किया है और इन सब बुराइयों का कारण मुहम्मद साहब को ही ठहराया है। अतः वह अपनी पुस्तक 'स्टोरिया डू मगोर' (Storia Do mogor) की जिल्द पहली में पृष्ठ १९२ पर शाहजहाँ की दो हज़ार औरतों का ज़िक्र करने के पहले लिखता है कि 'दुनिया जानती है कि मुसलमान अपने मास्टर मुहम्मद की मिसाल को मानते हुए बड़े कामी होते हैं। यही कारण है कि उनमें ऐसे आदमी पाये जाते हैं कि जिनमें से कुछ कम और कुछ अधिक, विशेषकर अमीर और बादशाह जो कई स्त्रियों पर शान्ति न रखकर, ऐसे कारण ढूँढते रहते हैं जिससे वे अपनी कामातुरता को शान्त कर सकें। यह बात दावे से कही जा सकती है कि शाहजहाँ इन बातों में दूसरे आदमियों से अच्छा नहीं था, क्योंकि बेगमात पर सन्तोष न

करके, वह अपने दरबारियो की स्त्रियों से भी अनुचित संबंध रखता था। यही कारण था कि उसने दरबारियों और अन्य राजपुरुषों की दृष्टि में अपना सन्मान और प्रेम खो दिया और खुद भी मर मिटा। देखो "स्टारिया डू मगोर" जिल्द पहली पृष्ठ १६२।

शाहजहाँ का ज़िकर तो हम आगे चलकर करेंगे कि वह कैसे नष्ट हुआ, इस जगह हम केवल इतना ही कह सकते हैं कि शाहजहाँ ने अधिकतर, बक़ौल मि० निकोलाओ अपने मास्टर मुहम्मदका ही अनुकरण किया। मुसलमान बादशाहों के कर्मों का उत्तरदाता, मुसलमानी शिक्षा और अधिकतर मुहम्मद का दृष्टान्त है। भारतवासियों को गिरानेके ज़िम्मेदार ज़्यादातर यही मुसलमान बादशाह थे। जैसा कि मैक्समूलर ने माना है या हम आगे चलकर ज़िकर करेंगे। हम इतिहास को जो कि आँख से देखी हुई बातों पर या विश्वास पर निर्भर हो, झुँठला नहीं सकते,हमको यह कल्पना कर लेना चाहिये कि हमारे स्कूलों में जो इतिहास पढ़ाये जाते हैं, जो कि गवर्नमेण्ट ने किसी द्वेष दृष्टि से नहीं लिखे। बल्कि इसलिये लिखे हैं कि हिन्दू मुसलमानों का आपस में सम्बन्ध दृढ़ होजावे। अगर हम इसी इतिहास पर ही सन्तुष्ट रहें तो भी मुसलमान बादशाहों के विरुद्ध इतना मसाला मिलता है कि जिसको पढ़कर किसी भी ईश्वर भक्त, दयालु और सभ्य मुसलमान का अपने पुरुषाओं पर घमण्ड करना नहीं चाहिये। इस इति-

हास को पढ़कर यह फल निकालना कि मुसलमान बादशाहों ने भारतवासियों पर कैसी सुखवृष्टि की केवल भ्रम ही रह जाता है। इसके विरुद्ध एक अङ्गरेज़ी लोकोक्ति है कि "जहाँ तुर्कों का क़दम जाता है वहाँ घास नहीं उगती" विशेषकर जबकि हम मुसलमानी राज के असर को मिसर, फ़ारस, स्पेन, अरब, तुर्की और अफ़ग़ानिस्तान में देखते हैं कि किस तरह वे उच्चकोटि से गिरकर अरबों के ही समान हो गये तो हमें मैक्समूलर का आश्चर्य और भी सत्य मालूम होता है। आओ ज़रा हम इस इतिहास पर दृष्टि डाल जायें, जिसको हमारे बच्चे प्रतिदिन स्कूलों में पढ़ते हैं, जिससे कि हम मुसलमान बादशाहों के विषय में कोई सम्मति नियत कर सकें।

❋ सुलतान महमूद ❋

महमूद गज़नवी से पहले, मुसलमानों ने भारतवर्ष पर आक्रमण तो किये परन्तु बहुत थोड़े। कुछ में उनको सफलता हुई, कुछ में नहीं हुई। मगर महमूद ने हमलों का तार बाँध दिया। मुसलमान महमूद को सच्चा मुसलमान और ग़ाज़ी समझते हैं। इसका कारण क्या है? महमूद का भारत के धन पर तो दाँत था ही, मगर साथ ही यह भी इच्छा थी कि बड़े बड़े बाँके राजपूतों को तलवार के ज़ोर से, दीन इसलाम में दाख़िल करे और उसका सबब ज़्यादातर यह हुआ कि ख़लीफ़ा

बग़दाद ने उसके मज़हबी जोश को देखकर एक बहुमूल्य ख़िलअत उसके लिये भेजा था। और "अमीनुल मिल्लत व यमीनुद्दौला" का ख़िताब दिया था। इस महमूद ने यह प्रण कर लिया था कि मैं दीन इसलाम के फैलाने के लिये हरसाल भारतवर्ष पर हमला करूँगा (तवारीख़ हिन्द पृष्ठ ६१)। महमूद के चालचलन की यह कुञ्जी है। इस मज़हबी जोश मे अन्धा होकर उसने १७ बार हिन्द पर हमले किये और लूट मार की। अगरचे तमाम मारमाट का ज़िकर नहीं किया गया है, तो भी संक्षेप से यह है छटा हमला सन् १०१४ ई० में हुआ था। उस हमले में महमूद ने थानेश्वर के प्रसिद्ध तीर्थ को, जो सरस्वती यमुना के बीच में है, लूटा और जला दिया और अनगिनत हिन्दुओंको कैद करके ग़ज़नी लेगया। कन्नौज से होकर महमूद मथुरा आया, जो कृष्णचन्द्रजी की जन्मभूमि होने के कारण, हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है। इस शहर की सुन्दरता और मन्दिरों की विचित्रता देखकर महमूद लौट गया और उसका यह जी चाहा कि ग़ज़नी के उजाड़ पहाड़ों पर भी ऐसी इमारतें बनवायें। यहाँ महमूद ने अपनी फौजको २० दिन तक शहर लूटने की आज्ञा दी, इसके बाद ग़ज़नी को लौट गया। मथुरा से महमूद की फ़ौज इस क़दर हिन्दुओं को पकड़ ले गयी कि ग़ज़नीमें दो२ रुपये हिन्दू गुलाम बिका। इससे मालूम होता है कि अगरचे महमूद एक कट्टर मुसलमान था मगर वह एक लुटेरे से बढ़कर नहीं था। जहाँ गया

उसने लूटा, स्त्री पुरुषों को गुलाम बनाया और उनको भेड़ बकरी की तरह बेचा। चूँकि लौंडी गुलाम बनाने को कुरान पुण्य समझता है, इसलिये महमूद इन सब कर्म्मों को पुण्य दृष्टि से देखा करता था। बल्कि खलीफ़ा बग़दाद ने भी उसको इन कर्म्मों के लिये उकसा रक्खा था। मुसलमानों के बच्चे स्कूलों में इन घटनाओं को हिन्दुओं के बच्चों के साथ साथ पढ़ते हैं। मगर वह कौनसा सभ्य मुसलमान है जो महमूद जैसे बादशाह पर घमण्ड करे और उसके कुकर्मों को अच्छा समझे। महमूद केवल लूटना ही नहीं जानता था, बल्कि वह बुतशकिनके साथ अहदशकिन (प्रतिज्ञा का तोड़ने वाला) भी था। उसने फ़िरदौसी को शाहनामा लिखनेकी आज्ञा दी और फ़ी शेर एक अशरफ़ी देने का वायदा किया। फ़िरदौसी ने बड़ी मेहनत से ६०००० शेर लिखे और किताब शाहनामा ठीक करके, बादशाह के सामने पेश किया, इस किताब की कविता ऐसी सुन्दर है कि जबतक फ़ारसी भाषा दुनिया में बाक़ी है, उसकी प्रसिद्धि कभी कम न होगी। साठ हज़ार शेर देखकर महमूद अपने वायदे से पछताया और कमीनेपन से फ़िरदौसी को साठ हज़ार रुपये अर्थात् प्रतिज्ञा किये हुए पारितोषिक का सोलहवाँ हिस्सा देने लगा। इसको फ़िरदौसी ने स्वीकार नहीं किया और नाराज़ होकर ग़ज़नी चला चला गया। तुफ़ा ६७, ६८। महमूद जैसा अन्यायी, दुःखदायी, आदमियों को बेचने वाला, लुटेरा और प्रतिज्ञा

भङ्ग करने वाला मनुष्य किसी भी जाति के लिये सन्मान के योग्य नहीं हो सकता।

जब बादशाह की यह दशा हो तो फिर प्रजा पर उसके बुरे दृष्टान्त का असर क्योंकर नहीं पड़ेगा। महमूद का कुटुम्ब नाश होने पर गुलामों का राज्य आरम्भ हुआ।

शमशुद्दीन अलतमश।

शमशुद्दीन अलतमश वास्तव में तो एक उच्च कुल का मनुष्य था। मगर संसार चक्र के अनुसार बचपन में एक के हाथ गुलाम होकर बिका था।

कुतबुद्दीन ने उसे बहुत लायक देखकर अपनी बेटी का विवाह उसके साथ कर दिया था। कुतबुद्दीन के बाद शमशुद्दीन अलतमश उसके बेटे आरामशाह को गद्दी से उतार कर, आप बादशाह हो गया। सुफ़ा ७७।

यह उस दीनदार मुसलमानकी नमकहलाली थी। जिसने उसको उच्च पद पर पहुँचाया उसकी सन्तान के साथ इस दीनदार मुसलमान ने नमकहरामी का प्रमाण दिया और अपने स्वामी के छोटे बच्चे को उसके हक़ से हटाकर, आप बादशाह बन गया। ऐसे अन्यायी बादशाह के चालचलन का प्रजा पर कब अच्छा असर पड़ सकता है। जिस जाति व देश पर ऐसे ऐसे बादशाह राज्य करते हों, उसका चालचलन गिरने से कब रुक सकता है। और ज़रा आगे चलिये, ज़रा पृष्ठों को लौटिये, इस सिलसिले के दूसरे बादशाह को देखिये।

कैक़बाद ।

सुलतान कैक़बाद का मन्त्री निज़ामुद्दीन नामी बड़ा बेवफ़ा और लालची मनुष्य था। चूंकि कैक़बाद के बाप बुग़राखाँ ने कैक़बाद को इस खोटे मन्त्री के स्वभाव से परिचित कर दिया था और कैक़बाद को भी अयोग्य व्यवहारों से रोका था। इस लिये वह नालायक़ मन्त्री बाप और बेटों में फूट डालने में तय्यार हुआ। उस समय बुग़राखाँ बङ्गाल का सूबेदार था, उसने कैक़बाद को अपने ही पिता बुग़राखाँ से युद्ध के लिये सेना भेजने को उकसाया। जब दोनों लश्कर पूर्व बिहार में आमने सामने आये तो दो रोज़ तक तो यों ही पड़े रहे, तीसरे दिन बुग़राखाँ ने अपने कुपूत बेटे कैक़बाद को अपने हाथ से पत्र लिखकर भेंट करने की इच्छा प्रकट की। प्रथम तो वज़ीरों ने यह चाहा कि भेंट होने ही न पाये। जब देखा कि बादशाह मिले बिना नहीं रहेगा, तो कैक़बाद को यह पट्टी पढ़ायी कि आप शहंशाह हिन्दुस्तान के हैं उसे राज दरबार के आदाब मिलने का आईन तो उसको चाहिये कि तीन बार सादर प्रणाम करे। बुग़राखाँ ने इसको भी मंज़ूर किया जब भेंट का समय आया तो प्रथम कैक़बाद राजा मण्डल में बड़ी शान दमक से आया, फिर उसका बूढ़ा बाप भी धीरे धीरे आया और राजगद्दी के सामने पहुँचते ही प्रथम दण्डवत् हुआ, बादशाह ने भी प्रतिज्ञानुसार आदाब लगाई फिर बुग़राखाँ ने ज़रा आगे बढ़कर दूसरी दफ़ा प्रणाम किया। यह इन

मुसलमानों की पितृ-भक्ति का नमूना है, कि वह अपने बाप से भी पैशाचिक बर्त्ताव करने से नहीं रुके। हिन्दू भला इनके पिशाचपने से कैसे बच सकते थे। यह लोग थे जो हिन्दुस्तान में इस्लाम का डङ्का बजाने आये थे। निज़ामुद्दीन मन्त्री को तो उसके मुसलमान भाइयों ने विष देकर मार डाला। मगर कैक़बाद जैसे नालायक कुपूत मुसलमान को एक दूसरे दीनदार मुसलमान, मुहम्मद जलालुद्दीन खिलजी ने मारडाला। इस तरह इन गुलामों की तो सफ़ाई हुई, अब खिलजी मुसलमानों की ईमानदारी सुनिये।

जलालुद्दीन खिलजी।

जलालुद्दीन, सुलतान कैक़बाद का मन्त्री बन गया था। फिर वह बादशाह को मारकर आप गद्दी पर बैठा और खानदान खिलजी का संस्थापक हुआ। इस कुटुम्ब का राज कुल तीस वर्ष रहा। देखो इस मुसलमान ने भी अपने स्वामी के साथ अपघात किया। जिस बादशाह ने इसको अपना मन्त्री बनाया था उसी को इसने मार डाला।

इस मुसलमान को अपनी नमकहरामी का खूब बदला मिला इसका भतीजा अलाउद्दीन अपने चचा को धोखे से मार कर देहली के राजसिंहासन पर बैठ गया। धोखा देना तो इन मुसलमानों की दृष्टि में पुण्य था। मालूम होता है कि मुहम्मद अलाउद्दीन खिलजी न केवल कपटी ही था, बल्कि अपने चचा

का घातक होने से फाँसी दिये जाने के योग्य था। मगर चूँकि वह कट्टर मुसलमान था, इसलिये यह उसके सब कुकर्म अच्छी दृष्टि से देखे जाते थे। यह मुसलमान बड़ा कामी भी था। चुनांचे बहुत से हिन्दू राजाओं और महाराजाओं के खानदानों का उसने अपने पैशाचिक स्वभाव से अन्धा होकर नाश कर दिया। गुजरात के राजा करन की विवाहिता स्त्री कमलादेवी की इज़्ज़त को इसी ने खाक में मिलाया। चित्तौड़ के विख्यात दुर्ग को जो महाराणा मेवाड़ की राजधानी थी, तोड़ फोड़कर लूटा। इसी पिशाच के अत्याचार के कारण महारानी पद्मावती ने बहुतसी क्षत्राणियों सहित चिता में जल कर अपने पातिव्रत्य धर्म की रक्षा की और इस दुष्ट का मुख तक नहीं देखा। गुजरात के राजा करण की लड़की देवलदेवी का इस दुष्ट ने अपने बेटे ख़िज़रखाँ से विवाह कर दिया। प्रियघात इन मुसलमानों का स्वाभाविक गुण था। इसलिये ख़िज़रखाँ के भाईने अपने बड़े भाईको मार डाला और देवल-देवी से ज़बरदस्ती विवाह कर लिया। (पृष्ठ ८४)

खुसरोखाँ।

ख़ानदान ख़िलजी का अन्तिम बादशाह, खुसरोखाँ था जो वास्तव में नीच ज़ात का हिन्दू और बादशाह का गुलाम था। मगर अलाउद्दीन के बेटे कुतुबउद्दीन मुबारिक ख़िलजी ने इसको अपना मंत्री बना लिया था। मन्त्री बनते ही दुष्ट

अपने स्वामी पर और उसके कुटुम्ब के सारे हितैषियों पर हाथ साफ़ करके राजसिंहासन पर बैठ गया और देवलदेवी से निकाह कर लिया।

शिक्षा किस से ली? हिन्दुओं से नहीं। उसके सामने मुसलमानों की मिसाल मौजूद थी। वह देखता था कि मुसलमानों में हर एक बादशाह अपने हितैषी का गला काटता और नमकहरामी करता चला आया है इसलिये उसको भी इसी नियम पर चलना चाहिये इसलिये उसने अपने मुहम्मदी भाइयों का अनुसरण किया तो आश्चर्य की क्या बात है? मगर इस मुसलमान को भी तो अपने किये का फल मिलना चाहिये। मार काट की रीति को जारी रखने के लिये यह ज़रूरी था कि खुसरोखाँ भी मार डाला जाता और हुआ भी ऐसा ही। दूसरे साल ही ग़यासुद्दीन तुग़लक़ ने इस नौमुसलिम को मार डाला और इस तरह खिलजी वंश की समाप्ति हुई। और तुग़लक़ वंश का आरम्भ हुआ।

तुग़लक़ वंश।

इस वंश के कुछ बादशाह बड़े मूर्ख और डरपोक थे। दूसरे बड़े२ मुसलमान सरदार और हाकिम अपने लिये बादशाह देहली से कुछ कम नहीं समझते थे, इसलिये वह बादशाह के साथ नमकहलाली और वफ़ादारी नहीं करते थे।

ऊपर जिसे तमाम दुश्मनों को पछाड़कर जान होता है कि मुसलमानों ने नमकहलाली तो सीखी ही नहीं। जिस थाली में खाना उसी बर्तन में छेद करना जिस देश में रहना उसी को हानि पहुँचाना, जिसका मन्त्री बनना उसी को मार डालना, जिसके नौकर होना उसी के विरुद्ध निशान का झण्डा ऊँचा करना जिससे मित्रता करनी उसी को धोखा देना। इन हालात से भले प्रकार प्रकट हो रहा है कि क्या कहें कुछ समझ में नहीं आता। मालूम नहीं कि इस्लाम में ही कोई ऐसा विष भरा है कि साँप की तरह दूध भी उसके मुँह में जाकर विष बन जाता है। खुसरोखाँ हिन्दू था, मगर मुसलमान बनकर वह भी हिन्दुओं के तमाम शुभाचरणों को भूल गया और बिल्कुल मुसलमान ही हो गया। अपने स्वामी को मारकर स्वयं राजसिंहासन पर बैठा यह कुछ संगति का ही फल है। क्योंकि अगर ऐसा न होता तो ज़फ़रखाँ जो कि एक ब्राह्मण का गुलाम था, और बाद में ब्राह्मणी राज्य का संस्थापक हुआ, अपने आपको पवित्र साबित नहीं करता। गङ्गो इस पर बड़ी कृपा करता था और उसने प्रथम ही कह दिया था कि तू बड़ा भाग्यवान होगा। जब ज़फ़रखाँ की श्री वृद्धि हुई तो उसने पुराने दयालु स्वामी की यादगार में उस ने अपना लक़ब सुलतान अलाउद्दीन हसन गङ्गो-ब्राह्मण रक्खा यह ब्राह्मण की संगति ही का फल था कि जिसने ज़फ़रखाँ से असभ्य को जिसके पुरुषा नमकहरामी और स्वामिघात करते चले आये थे, स्वामिभक्त बना दिया। खुसरोखाँ हिन्दू

से मुसलमान बनकर मुसलमान का गुलाम बना तो उसकी वह दशा हो गई जो ऊपर वर्णन की गई है। ज़फ़रखाँ एक ब्राह्मण का गुलाम बना तो ऐसी हालत हो गई। यह संगति का ही फल है। ख़ानदान तुगलक के बादशाह मूर्ख और डरपोक तो थे ही मगर उनके मददगार मुसलमान सरदार भी नमकहराम थे, जिसके हाथ जो लग गया दबा बैठा। हाजी इलियास बङ्गाल का गवर्नर बनाकर भेजा गया। मगर वह वहाँ सरकश होकर बादशाह बन गया। जौनपुर, गुजरात मालवा में भी मुसलमान सरदार सरकश होगये, लेकिन तैमूर ने ख़ानदान तुग़लक का दीपक बुझा दिया।

तीसरा खण्ड।

मुसलमानों के अन्याय का दूसरा दौर।

तैमूर।

महमूद तुग़लक की सेना को हराकर तैमूर दिल्ली में आया कुछ दिन तो शान्त रहा, परन्तु दिल्ली में कहीं थोड़ा सा झगड़ा हो गया, इस पर तैमूर ने क़त्लेआम का हुक्म दे दिया। आप तो पाँच रोज़ तक आनन्द भोगता रहा उसकी सेना प्रजा को लूटती और काटती रही। जो लोग बच रहे

उनमें से हज़ारों को क़ैदी बनाकर ले गई। उनमें निहायत शरीफ अफ़गाना सभ्य और हिन्दुओं के स्त्रियां और बच्चे भी थे। इतिहास में लिखा है कि तैमूर का एक २ सिपाही भारत से डेढ़ २ सौ गुलाम ले गया था और सिपाहियों के लड़के बीस२ गुलाम अपने वास्ते अलग ले गये थे और लूट के माल का तो कुछ हिसाब ही न था। हा! जिस समय उस ऋषि सन्तान ने जिसका नैत्यिक कर्म सन्ध्या अग्निहोत्रादि पञ्चयज्ञ था, अत्याचारी राक्षसों के चुङ्गल में फँसकर उनके उच्छिष्ट भोजन खाने से नकार करते हुए किस प्रकार अपने रामचन्द्रादि वीरों का स्मरण करते प्राण त्यागे होंगे। उस हृदयविदारक ऋषि सन्तान की वेदना को स्मरण करके कौन ऐसा आर्य होगा जो रुधिर के आँसू न बहायेगा और वह पतिव्रता असूर्यम्पश्या ऋषि अबिलायें जिन्होंने परपुरुष का मुख भी कदाचित ही देखा होगा, म्लेच्छों के कर्कश हाथों से घसीटी जाती हुई अपने पैतृकस्नेह को स्मरण करती हुई हरिणी के समान बाघ के मुख में पड़ी हुई के प्राण गँवाने के लिये आर्त्तस्वर किस आर्य के कानों में न गूंजते होंगे।

मुहम्मदी सभ्यता के लिये इससे बढ़कर और कोई कलङ्क नहीं हो सकता कि उसने गुलामी को जायज़ रक्खा और मनुष्यों के बच्चों के साथ भेड़ बकरियों का सा बर्ताव किया। जिस देश पर महमूद, जलालुद्दीन, अलाउद्दीन और तैमूर जैसे अन्यायी दुःखदायी और आदमियों को बेचने और कत्ल करने वाले महा पातकी बादशाह राज्य करते रहे हों

और यदि ऐसे बादशाहों को कुकर्मों ने इस मुल्कके रहनेवाला के चालचलन को गिरा दिया हो और उनको दुर्व्यसनों का दास बना दिया हो जो इस समय हिन्दुओं में नज़र आते हैं तः इसमें आश्चर्य की कोनसी बात है? प्रोफेसर मैक्समूलर सच कहते हैं कि ऐसे कुकर्मी मनुष्यों के आधीन रहकर हिन्दू स्वयं भी शैतान क्यों नहीं बन गये?

तैमूर के चले जानेके बाद, हिन्दुस्तान में जो खराबी फैली वह बड़ा हानिकारक थी। परन्तु बाबर ने पानीपत के मैदान में इसका अन्त कर दिया। बाबर और उसके बेटे हुमायूँ को कुछ अधिक काल तक राज्य करने का अवसर नहीं मिला।

हाँ, अकबर के राज्यकाल ने भारतवासियों पर विशेष प्रभाव डाला अकबर दीनदार नहीं था। वह विशेष कर मुसलमान भी नहीं था। यद्यपि उसकी रगों में इस्लामी खून मौजूद था, तथापि उसको इस्लाम से प्रीति नहीं थी। शायद् यहीकारण हो कि वह दूसरे मुसलमानों की तरह अत्यन्त कपटी छली, अन्यायी और घातक नहीं था। उसने जज़िया मोकूफ कर दिया था जो कि मुसलमानों की ओर से काफिरों पर दण्ड लगाया गयाथा। अकबर के विरुद्ध हम अधिक नहीं कह सकते। इतना अवश्य है कि दीन इलाही का संस्थापक होने के साथर मीना बाज़ार का भी रचियता था। जिस में रईस और दरबारियों की स्त्रियाँ सम्मिलित होती थीं। मीना बाज़ार किस प्रयोजन के लिये था, इसका ज़िक्र फिर किया जायगा।

मीना बाजार अकबर के चालचलन पर धब्बा लगाये बिना नहीं रह सकता। अकबर ने अपनी लड़की की शादी एक सूबेदार के साथ कर दी थी जोकि बगावत पर कटिबद्ध हो गया था। यह देखकर अकबरने नियम बना दिया कि आगे को किसी भी शहज़ादी की शादी न की जाय। अकबर के इस नियम पर औरंज़ेब के समय तक अमल होता रहा। मगर इससे बड़ी२ बुराइयाँ पैदा हुईं। अकबर यद्यपि अन्यायी नहीं मगर जब अन्याय करने पर आता था तो बड़ा बेढब अन्याय करता था। आगरे के समीपस्थ कुछ ज़मींदारों ने महसूल अदा करने से इन्कार किया था। अकबर ने उनको मरवा कर उनके सिरों के खम्भे चिनवा दिये और वहाँ पर अकबराबाद या मोजूदा आगरा बसाया। इन्हीं ज़िमींदारों की औलाद ने बाद में औरङ्गज़ेब के समय में अवसर पाकर अकबर की हड्डियों को क़ब्र में से निकलवाकर जलादिया और उनकी राख नदी में बहा दी। अकबर चित्तौड़ के मशहूर राजपूत जैमल की स्त्री क हासिल करने के लिये संग्राम किया। परन्तु यह लड़ाई इसको बड़ी महँगी पड़ी। इन घोर लड़ाइयों के होने पर भी अकबर इतना बुरा नहीं था जितने कि अन्य मुसलमान बादशाह हुए हैं। अकबर के बाद उसका बेटा जहाँगीर गद्दी पर बैठा। जहाँगीर के विषय में यह कहना कि वह क्या था, बड़ा कठिन विषय है।

क्या जहाँगीर मुसलमान था ?

हमें कई दफा लाहौर के शाहदरे जाने का इत्तिफ़ाक हुआ, शाहदरे में जहाँगीर बादशाह का मकबरा है। मकबरे की इमारत किसी समय देखने योग्य थी, परन्तु अब दिन दिन बिगड़ती जाती है। सङ्गमरमरके चौके उखड़वा डाले गये और उनकी जगह साधारण ईंटें व पत्थर लगा दिये गये हैं। जहाँगीर की कब्र के ऊपर चारों तरफ़ सुन्दर अक्षरों में नाम लिखे हैं जिनको पढ़कर यही यक़ीन होता है कि इस क़ब्र में कोई पीर गढ़ा है। जहाँगीर की क़ब्र पर हरा कपड़ा, जोकि मुसलमानों में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है, पड़ा रहता है। क़ब्र के ऊपर फूलों का ढेर लगा रहता है। अकसर मुसलमान बड़ी श्रद्धा से क़ब्र को प्रणाम करने आते हैं। मुरादें माँगी जाती हैं, सर रगड़ा जाता है। ऐसा मालूम होता है गोया जहाँगीर स्वयं ख़्वाजे मुईउद्दीन चिश्ती अजमेरीके समान था। मगर नहीं, ऐसा नहीं। घटनायें कुछ और ही बताती हैं। जिनको पढ़कर यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि यह जहाँगीर मुसलमान भी था या नहीं? मिस्टर निकोलाओ जिसका वर्णन हम पीछे कर आये हैं, जिसने औरङ्गज़ेब के संपूर्ण शासन काल को देखा और एक पूरा इतिहास (Storia do mogoc) लिखा है। वह अपने इतिहास में बहुतसी ऐसी घटनाओं का वर्णन करता है कि जिनके बयान करने वाले जहाँगीर के समय से लेकर औरङ्गज़ेब के ज़माने तक भी ज़िन्दा थे। चुनाचे उपरोक्त ऐति-

हासिंक अपने इतिहास जिल्द १ पृष्ठ ११८ में लिखता है कि एक दफा जहाँगीर ने एक जेसूट पादरी को बुलाया और दूसरी बातों के अतिरिक्त जहाँगीर ने उनसे पूछा कि सुअर के मांस का स्वाद कैसा होता है? पादरी ने अपने अनुभव से उत्तर दिया कि सुअर का मांस सुस्वाद होता है। इस पर बादशाह ने पादरी को आज्ञा दी कि हमारे लिये सुअर का मांस तैयार करके लाओ। जब जहाँगीर ने वह गोश्त खाया तो उसको वह बहुत ही अच्छा लगा। यहाँ तक की बाद में उसने कई बार अपने दरबारियों के सामने भी उसको खाया। चूंकि मुसलमानों मे सुअर का मांस हराम समझा जाता है, इसलिये तमाम मुल्ला लोग बादशाह की इस हरकत पर नाराज़ हो गये और सबने सेवा में उपस्थित होकर निवेदन किया कि आप ईश्वरीय आज्ञा को न तोड़े। जहाँगीर उस समय ख़ामोश रहा, मगर उसको बड़ा ही क्रोध आया। दूसरे अवसर पर उसने तमाम मुसलमान विद्वानों को दरबार में इकट्ठा करके पूछा कि क्या तुम किसी ऐसे मत का नाम ले सकते हो जिसमें सुअर और शराब हलाल समझे जाते हों? विद्वानों ने उत्तर दिया कि ऐसा मज़हब तो सिवाय ईसाई मजहब के और कोई नहीं है। जहाँगीर ने आज्ञा देदी कि अच्छा तो हम कल से ईसाई मत स्वीकार करेंगे। उसी समय दरज़ी को बुलाकर कहा कि हमारे लिये ईसाइयों की पोशाक तैयार करो। जहाँगीर ने बड़ी गम्भीरता से ईसाई मत स्वीकार

करने की तैयारी करली। यह देखकर तमाम मौलवी लोग भड़क उठे, क्योंकि वह जानते थे कि बादशाह के दिल में जो कुछ आता है वह कर गुज़रता है। ईश्वर न करे यदि वह ईसाई हो गया तो मुसलमानोंका काम बिगड़ जावेगा। चुनाचे उन सबने इकट्ठे होकर व्यवस्था दी कि बादशाह पर शरीअत की पाबन्दी ज़रूरी नहीं है, वह जो चाहे खा पी सकता है। इसके बाद जहाँगीर पूर्ववत् सुअर और शराबका सेवन करता रहा और किसी ने चूं तक न की, बल्कि उसने यहाँ तक मुसलमानों को तङ्ग किया कि ढले हुये खाने के सुअर बनवाकर अपने महल के चारों तरफ़ गढ़वा दिये। प्रातःकाल ही उठकर उन सुअरोंको देखता और कहा करता था कि प्रातःकाल किसी मुसलमान का मुँह देखने के बजाय सुअर का मुँह देखना मुझे अधिक प्रिय है। यह सुअर शाहजहाँ के समय तक बराबर महल में मौजूद रहे, मगर बाद में शाहजहाँ ने उनको किले के नीचे गिरवा दिया। (storia do mogor Vol I. P. 158)

२—जहाँगीर मुसलमानों से घृणा करता था। शायद राजपूतनी का बेटा होने की वजह से उसकी रगों में कुछ राजपूती खून था, या क्या? मगर मुसलमानों को वह पसन्द नहीं करता था यही कारण था कि द्वेषी मुसलमान उससे भयभीत रहते थे। वह भी उनके दर्प को तोड़ने के किसी अवसर को हाथ से नहीं जाने देता था। वह ऐतिहासिक फिर लिखता है कि रमज़ान शरीफ़ के दिनों में मुसलमानों का क़ायदा है कि वह रात के समय खूब जागते, खाते पीते और हँसते खेलते

हैं, दिन के वक्त खूब सोते हैं, न खाते हैं, न पीते हैं। जहाँगीर रोज़ा रखने के बड़ा विरुद्ध था। वह कभी रोज़ा नहीं रखता था, बल्कि मुसलमानों का रात्रि जागरण और दिन में सोना या दरबार में आकर ऊँघना उसको बहुत ही बुरा लगता था। मुसलमानों के दर्प को तोड़ने के लिये उसने ठीक दोपहर को जबकि भूखका समय होता था, दरबार लगाना शुरू कर दिया और उन सबके सामने खाता पीता बल्कि प्रायः रोज़ादार कट्टर मुसलमानों के सामने भी कोरमा पुलाव की रकाबी रख देता कि भोग लगाइये। यह लोग इस डर के मारे कि अगर अन्न खाने से इन्कार किया तो अभी जीते जी शेर के सामने डलवा दिये जायँगे, रोज़ दोपहर के समय ही रोज़ा खोलने और पुलाओं की रकाबी को खाने के लिये विवश होते थे। इस तरह जहाँगीर ने बहुत से कट्टर मुसलमानों को समझदार बना दिया और वह मुफ्त की फाक़ाकशी से बच गये।

३-जहाँगीर का एक हकीम बड़ा ही पक्षपाती मुसलमान था। बादशाह चाहता था कि इसको किसी तरह अपने ढङ्ग पर लाये, मगर वह अपनी हठ पर क़ायम था। एक दिन जब कि जहाँगीर शराब के नशे में चूर था, उसने इस मुसलमान हकीम को बुलवा भेजा। जब वह आया तो जहाँगीर ने हुक्म दिया कि हमारे पास तीर कमान लाओ ताकि इस हकीम को जिसने अपनी हिकमत के बहाने से कई आदमियों को ज़हर दे कर मार डाला है, जानसे मार डालें। दरबारी लोग यह सुन

कर चकित रह गये। करीब था कि जहाँगीर के हाथ में तीर दे दिये जाते और वह इस मुसलमान का शिकार कर डालता मगर नूरजहाँ जोकि इस हकीम की इज़्ज़त करती थी, इस बात को देखकर डर गयी। उसने पर्दे के पीछे से इशारा किया कि बादशाह के हाथ में बजाय असली तीरों के सरकंडे के नक़ली तीर देदो। इधर हकीम को समझा दिया कि सरकंडे के तीन चार तीर खाकर तुम गिरजाना। बादशाह समझ लेगा कि तुम मर गये हो। बादशाह ने जोकि शराब के नशे में चूर था, इस मुसलमान के तीर मारने शुरू किये। वह कुछ देर तक तो तीर खाकर मुसकराता रहा, मगर फिर बहाना करके अर्थात् वह बहुत ही ज़ख़्मी होगया है, एक तरफ को गिर पड़ा। यह देखकर बादशाह ने तीरों की बौछार करना रोकदी। इस बहाने से हकीम की जान बच गयी। मगर वह फिर कभी बादशाह के सामने नहीं आया। बादशाह ने यह सब कार्रवाई केवल इसलिये की थी कि वह मुसलमानों को पसन्द नहीं करता था। (पृष्ठ १३०)

४—वही ऐतिहासिक लिखता है कि जहाँगीर पादरियों के शास्त्रार्थ में बहुत मन लगाता था। वह बड़े बड़े पक्षपाती और विद्वान् मुसलमान मुफ़्तियों और क़ाज़ियों को उनके सामने बुलाकर अपमानित करवाता था चुनाचे एक पादरी जोज़फ को बादशाह ने भरे दरबार में क़ाज़ीआज़म के साथ बहस करने के लिये खड़ा कर दिया। क़ाज़ी की मण्डली में तमाम

बड़े बड़े भारी विद्वान् मुसलमान सम्मिलित थे, मगर उन सब का प्रधान काज़ी ही था। दूसरी ओर पादरी जोजफ़ था, बहस शुरू हुई मुसलमानों का पल्ला भारी नज़र आया। एक समय पादरी जोजफ़ चुप हो गया। उस पर तमाम मुसलमानों ने खुशी के शब्द उच्चारे और काजी जी ने बादशाह से कहा कि महाराज मैंने साबित कर दिया कि बाइबिल झूठी किताब है। पादरी ख़ामोश है। यह सुनकर पादरी जोजफ़ ने बड़े जोश से कहा कि यह बिलकुल ग़लत है। बादशाह सलामत अभी एक भट्ठी में लकड़ियाँ भर कर अपने हाथ से आग लगादें, मैं बाई-बिल को और काजी साहब कुरान को हाथ में लेकर दोनों इस आग में कूद पड़ेंगे। अगर मैं जल गया तो बाईबिल झूठी और कुरान सच्चा, अगर क़ाज़ी जी जल गये तो बाईबिल सच्ची और कुरान झूठा। क़ाज़ी जी साहब मैदान में निकले बन्दा तैयार है। पादरी के इस चैलेञ्ज को सुनकर क़ाज़ी साहब के हाथ के तोते उड़ गये चेहरे का रंग जाता रहा और भरे दरबार में मारे डरके क़ाज़ी जी का पाख़ाना निकल पड़ा, क्योंकि वह जानता था कि बादशाह अभी इसको आग में झोंक देगा। तमाम दरबार में बदबू फैल गई। बादशाह ने नाक बन्द करली। क़ाज़ी जी को धिक्कार कर बाहर निकाल दिया कि जाओ कपड़े बदलो।

इधर पादरी जोज़फ़ को खुश होकर पादरी आतिश का खिताब दिया। क्योंकि वह आग के द्वारा बहस की समाप्ति

कर देने को तैयार था। बादमें पादरी साहब बराबर आतिश के नाम से बराबर पुकारे जाते रहे। मुसलमानों को बड़ी लज्जा आई। पृष्ठ १३१। मुसलमान मदिरा पान को बुरा समझते हैं। मगर जहाँगीर बड़ा मद्यप था। नूरजहाँ ने उस की आदत को बहुत कुछ कम कर दिया था। परन्तु नूरजहाँ को भी कभी२ बड़ा कष्ट उठाना पड़ता था। चुनाचे एक बार बादशाह ने महफिल सजाई। परदेसे बाहर गाना बजाना हो रहा था और बादशाह अन्दर शराब पीने में लगा था। जब वह नो प्याले एक दम चढ़ा चुका और उसको सर पैर की कुछ सुध न रही तो नूरजहाँ को फिक्र हुई। बादशाह अभी और शराब माँग रहा था, मगर नूरजहाँ देनेसे इन्कार करती थी। इस पर जहाँगीर ने क्रोधमें आकर बेगमको पकड़ लिया और दो तीन मार दीं। नूरजहाँ ने भी तुरकी बतुरकी जवाब दिया। दोनों खूब गुत्थम गुत्था होने लगे। यह देखकर बाजे बजाने वालों के होश उड़ गये। मगर उनमें से किसी की यह जुर्रत नहीं थी कि अन्दर आकर दोनों को अलाहदा कर दे। बाजे बजाने वालों ने भी बाहर गुल मचाया और एक दूसरे को पीटना शुरू कर दिया। जब बादशाह ने उनका शोरगुल सुना तो झट परदेसे बाहर आगया और पूछा कि क्या मामला है? उन्होंने कहा हमने हुज़ूर के ध्यान को अपनी तरफ खेंचने के लिये यह झूठा दंगा किया था। इस पर बादशाह बहुत हँसे।

गो नूरजहाँ के साथ उसने फिर फ़िसाद न किया मगर नूरजहाँ उस दिन से बहुत बिगड़ गई। बादशाह ने हरचन्द कोशिश की मगर वह नहीं मानी। अन्त को उसने कहा, एक शर्त पर माफ़ कर सकती हूँ कि बादशाह मेरे पैरों पर सर रख कर माफ़ी माँगे। बादशाह इस बात के लिये भी तैयार होगया।

६-बादशाह कभी२ शराबकबाब का सब सामान हाथियों पर लाद कर शहर में चक्कर लगाया करता था और खुल्लम खुल्ला शराब पीता और नाच देखा करता था। एक बार जब कि वह इसी हालत में फिर रहा था, तो रास्ते में कुछ फक़ीरों ने जो कि बेकार कहलाते थे, बादशाह को डाटा कि तू अकेला ही मज़े उड़ाता है और हमको भूल गया? यह सुनकर बादशाह झट हाथी पर से उतर पड़ा और उसी जगह डेरा लगा दिया। फकीरों के साथ खूब शराबोकबाब में शरीक हो गया। फकीर इस बीच में नशे में बेहोश होकर आपस में एक दूसरे के चपत लगाते और खूब दिल्लगी करते रहे। जब महफिल समाप्त होगई तब बादशाह रोने लगा कि सामाने अशरत खतम शुद अर्थात् ऐश का सामान समाप्त हो गया। जहाँगीर बहुत जल्द रोने लगता था और इत्मीनान उस वक़्त रोता था, जब कि उसको शराब नहीं मिलती थी। शराब के प्याले को देखकर ही वह बच्चों की तरह हँसने लगता था। बादशाह की इन कारवाइयों को देखकर मुसलमान बहुत ही

कुढ़ा करते थे, लेकिन वे कभी भी दम नहीं मारते थे, क्योंकि उनको अपनी जान का भय रहता था।

मिष्टर निकोलाश्रा साहब लिखते हैं कि जहाँगीर के वक्त की आँखों देखी घटनाओं का ज़िकर करने वाले मेरे वक्त तक मौजूद थे, जिन्होंने उन घटनाओं का मुझसे ज़िकर किया। उन घटनाओं को देखकर कौन कह सकता है कि जहाँगीर मुसलमान था। मगर वह हिन्दू भी नहीं था। अगरचे वह मुसलमानों को तंग करता था लेकिन उसके चालचलन का हिन्दुओं पर कुछ अच्छा असर नहीं पड़ता था। ऐसे रंगीले बादशाह को देखकर अगर प्रजा भी रंगरलियाँ उड़ाने और शराबोकबाब उड़ाने लग जावे तो आश्चर्य की क्या बात है? और वास्तव में ऐसा ही हुआ। क्योंकि अकबर के समय में शराब इस अधिकता से नहीं पीजाती थी जिस कदर कि लोग जहाँगीर के समय में पीने लगे थे। जहाँगीर के चालचलन का अनुकरण, शाहज़ादों और प्रजा सभों ने किया। जहाँगीर का एक बेटा शाहज़ादा खुर्रम भी इसी स्थिति में जहाँगीर की मृत्यु के बाद शहज़ादे बुलाकी के नाम से तख्त पर बैठा था। वह रात दिन शराबोकबाब और नाचोरंग में मशगूल रहता था। कुछ महीनों के बाद शहज़ादे खुर्रम ने उसको हरा कर भगा दिया और उसके लड़के को ज़िन्दा दीवार में चुनवा दिया और खुद शाहजहाँ के नाम से गद्दी पर बैठा।

शाहजहाँ।

शाह जहाँ मुग़लिया बादशाहों में अपनी किस्म का निराला बादशाह था मगर बेरहमी और जुल्म में किसी मुसलमान बादशाह से कम नहीं था। चुनाचे उसने गद्दी पर बैठते ही बाबर की औलाद में जिस कदर मर्द थे उन सब को मरवा डाला। मगर शाहजहाँ का अन्ता परिणाम भी ठीक नहीं हुआ इसका कारण इसकी बदचलनी बयान की जाती है। मिष्टर निकोलाओ ने जो शाहजहाँ के जीवन कालमें ही हिन्दुस्तान में मौजूद थे, अपने इतिहास में इस बादशाह के चालचलन का निहायत ही खराब तौर पर वर्णन किया है। हालात ऐसे गन्दे हैं कि हम उनको अपने शब्दों में यहाँ दर्ज करना भी मुनासिब नहीं समझते। हम इस विषय को दर्शाने के लिये मिष्टर निकोलाओ की तवारीख की पहिली जिल्द की सिर्फ थोड़ी सी घटनायें वर्णन करते हैं, जिससे मालूम हो जायगा कि शाहजहाँ क्यों तबाह होगया? शाहजहाँ ने महल की बेगमात पर सन्तोष न करके, अपने अमीरों वज़ीरों और दरबारियों की औरतों पर भी हाथ साफ करना आरम्भ कर दिया चुनाचे ज़ाफ़रखाँ की स्त्री से, जो कि उच्च पदाधिकारी था, शाहजहाँ ने अपनी पापेच्छा पूरी की। इसी तरह एक दूसरे सरदार खलीलुल्लाखाँ की स्त्री को भी भ्रष्ट किया। मगर सब से बढ़कर शर्मनाक बर्ताव उसने शाइस्ताखाँ की औरत से किया। शाइस्ताखाँ की स्त्री सुन्दर होने के अतिरिक्त; बड़ी

पतिव्रता भी थी। जब शाहजहाँ ने अपनी कुटनियों के द्वारा उसके पास सन्देशा भेजा तो उसने इन्कार कर दिया। और किसी तरह भी अपनी इज़्ज़त को खराब करवाने को तैयार नहीं हुई। अन्त को शाहजहाँ ने धोके से उसे खराब किया और वह इस तरह कि उसने यह काम अपनी बड़ी लड़की के सुपुर्द किया। जिसको कि बेगमसाहिबा कहा जाता था। बेगम ने शाइस्ताखाँ की औरतको दावत दी और इस बहाने से उसको महल में बुलाकर शाहजहाँ के सुपुर्द कर दिया। शाहजहाँने ज़बरदस्ती इस निरपराधिनी की इज़्ज़त को बिगाड़ा। वह निहायत ही दुःखिता होकर घर लौटी। खाना पीना छोड़ दिया और इसी दुःख में कुछ दिनोंकेबाद मरगई शाइस्ताखाँ ने जो कि औरङ्गज़ेब के समय में ढाके का नवाब मुकर्रिर हुआ मौका पाकर शाहजहाँ की इस बेशर्मी का बदला लिया। अकबर ने जिस मीनाबाज़ार की बुनियाद डाली थी वह भी केवल इसलिये थी कि अमीरों और वज़ीरों की स्त्रियोंको भ्रष्ट करे। इसलिये हयादार, सभ्यगण कभी अपनी स्त्रियों को मीनाबाज़ार में जाने की आज्ञा नहीं देते थे। शाहजहाँ ने इस रीति से ज़ोर अनाचार किये वह बयान से बाहर हैं। मीनाबाज़ार में केवल स्त्रियों को ही जाने की आज्ञा थी। शाहजहाँ एक सुनहरी तख़्त पर, जिसको कि औरतें उठाये होती थीं, बाज़ार में से गुज़रता था। जिस किसी स्त्री को भ्रष्ट करना होता था उस की दूकान पर थोड़ा ठहर के चला जाता। मगर उस

का सौदा दरअसिल दूसरी किस्म का होता था। जब वह अपनी ख़वासों के द्वारा तमन्ना नियत कर लेता था तो वह इस लेडी को नियत स्थान पर ले जाती थीं, जहाँ बादशाह पहिले से ही पहुँचा हुआ होता था। इस तरह वह बारी२ से इन औरतों को नष्ट भ्रष्ट करता था। मगर अमीरों वज़ीरों की स्त्रियें भी कुछ ऐसी बेहया और निर्लज्जा होती थीं कि वे केवल इसी कारण बन ठन कर मीना बाज़ार में आती थीं कि किसी तरह बादशाह उनको पसन्द करले। क्योंकि पसन्द की हुई को मालामाल होने की आशा होती थी। मीना बाज़ार में इतनी स्त्रियाँ इकट्ठा होती थीं कि एकदफ़ा जब बाज़ार समाप्त हुआ और उनका दरवाज़ा से बाहर निकलते हुए गिना गया तो उन की गिनती ३०००० तीस हज़ार से ज़्यादा निकली। शाहजहाँ इस क़दर कामी था कि उसकी पापेच्छा का बयान करना कठिन है। इन सब बातों पर भी सब्र न रखता हुआ, वह अक्सर बाज़ारी औरतों को महल में बुलाया करता था, और उनका नाच रंग कराने के अतिरिक्त उनके साथ बदचलनी भी करता। शाहजहाँ के महल में बेगमात के अतिरिक्त इस प्रकार की औरतों की संख्या दो हज़ार थी और उनकी प्रत्येक दिन वृद्धि ही होती जाती थी। चूंकि शाहजहाँ को दूसरे भले मानुषों की स्त्रियों को भ्रष्ट करते कुछ भी लज्जा नहीं थी, इस लिये तमाम प्रतिष्ठित समुदाय उससे तङ्ग आगया था। यही कारण था कि जब औरङ्गज़ेब ने बग़ावत का झण्डा बुलन्द

किया तो एक भी सरदार उसकी या उसके प्यारे बेटे दारा की हिमायत के लिये आगे न बढ़ा बल्कि सब के सब उसको छोड़कर औरङ्गज़ेब से जा मिले। औरङ्गज़ेब ने अपने भाइयों को कत्ल कर डाला और बाप को कैद कर लिया। मगर बूढ़ा बाप सफ़ेद दाढ़ी रखकर भी अपनी बदचलनी से नहीं हटा। बल्कि इसही के कारण वह मरा भी। वह इस प्रकार हुआ कि जब बुढ़ापे में उसकी ताकत कम होगई तो उसने तरहर के कुश्ते खाने शुरू किये। एक दिन जबकि वह शीशे के सामने खड़ा हुआ अपनी दाढ़ी मूंछ को देख रहा था तो पीछे कई एक बांदियों ने हँसी की। देखो—यह बूढ़ा अभी तक अपनी करतूतों से नहीं हटा और समझता है कि वह अभी तक कल का बच्चा है। शाहजहाँ ने इस हरकत को देखा और उनको अपनी जवानी का जोश दिखाने के लिये बड़े तीव्र कुश्ते खाने शुरू किये। इन कुकर्मों से उसका मसाना फट गया और वह शीघ्रही मरगया शाहजहाँ का चालचलन इसी विषय में गिरा नहीं था, बल्कि यह देखकर कि विवाहिता स्त्रियों से ज़्यादा सन्तान पैदा करने से राज्य के आने वाले वारिसों में झगड़ा होगा, उसने केवल दो बेटियों और चारबेटों को जिन्दा रक्खा उसके बाद जिस किसी बेगम को गर्भ रहता, तो तत्काल ही गिरवा देता। दुर्भाग्य से यह शाहजहाँ की जारी की हुई रस्म मुग़लिया बादशाहों में मुद्दत तक रही और औरङ्गज़ेब जैसे मुसलमान ने भी इसको पसन्द किया। चूंकि अकबर के

समय में अकबर के दामाद ने बादशाह के विरुद्ध बग़ावत की थी और तख़्त पर अधिकार करना चाहा था, इसलिये अकबर ने यह नियम बनाया कि आगे को किसी भी मुग़लिया वंश की शहज़ादी का विवाह न किया जावे। औरङ्गज़ेब के समय तक यह रस्म जारी रही। शाहजहाँ इतना व्यभिचारी था परन्तु उसने भी अपनी लड़कियों का विवाह नहीं किया जिस का फल यह हुआ कि उन्होंने अनुचित रीतियों से अपनी कामाग्नि बुझाई। शाहजहाँ की बड़ी लड़की की यह अवस्था थी कि उसने किले के बाहर महल बनवा लिया था। चूंकि बादशाह का इसको ख़ातिर मन्ज़ूर थी, इसलिये वह उसकी किसी भी इच्छा की पूर्ति में बाधक नहीं होता था। उन शहज़ादियों के अपने आदमी थे जो कि ख़्वाजासराओं को मारफ़त महल में ले जाये जाते थे, और वह अक्सर औरतों के भेष में जाते थे। कई दफ़ा वे पकड़े गये और मार डाले गये। शाहजहाँ की छोटी लड़की, रोशनआरा बेगम, जो कि औरङ्गज़ेब की तरफ़दार थी और जिसने औरङ्गज़ेब को तख़्त हासिल करने में बड़ी मदद दी थी, सफ़र में किसी लौंडी को अपने हौदे में साथ नहीं रखती थी बल्कि लौंडी के बजाये एक नवयुवक को ज़नानी पोशाक में साथ रखती थी। औरङ्गज़ेब चूंकि मुसलमान था, वह चाहता था कि अकबर की जारी की हुई, कुप्रथा को तोड़ दे और अपनी लड़कियों की शादी करदे लेकिन उसको ऐसा करने के लिये कोई मौका नहीं मिलता था,

मगर वह मौका जल्दीही उसके हाथ आगया। औरङ्गज़ेब की बड़ी लड़की, जोकि बहुत उम्र की हो चुकी थी, रौशनआरा के हालात से वाकिफ थी। इसको पता लगा कि रौशनआरा ने महल मेंनौ नौजवान, औरतोंके लिबास में रख छोड़े हैं। उसने अपनी मौसी से दरख्वास्त की कि बरायखुदा इनमेंसे एक नौजवान मुझे दे दे। मगर रौशनआरा ने जवाब दिया मैं नहीं दूँगी, अगर तुझे ज़रूरत है तो और मँगवाले। दोनोंमें झगड़ा होगया। लड़की नेमतलब पूरा नहोते देखकर भांडा औरङ्गज़ेब के सामने फोड़ डाला। रौशनआरा के महल की तलाशी हुई और उन नौ आदमियों को गिरफ्तार करके मार डाला गया मगर साथ ही रौशनआरा का भी अन्त कर दिया गया। इस घटना के बाद औरङ्गज़ेब ने फ़ौरन अपनी लड़कियों की शादी करदी और शाही नियम की कुछ भी परवा नहीं की विशेष-तया देखो Storia do mogor. Vo. I P 192-200 anb 2nd voluinme.

अपनी प्रिय बेगम ताजमहल की मृत्यु के बाद शाहजहाँ ने (आगरे की बजाय देहली में रहना शुरू कर दिया) और तुग़लकाबाद के पुराने खंडरात पर मौजूदा देहली की नीव डाला, और उसका नाम शाहजहानाबाद रखा। जब शहरकी नीव रखी जाने वाली थी तो उसने हुक्म दिया कि बहुत से कैदियों के सिर काट कर बुनियाद में रख दिये जावें चुनाचे वैसा ही किया गया। Storia ao mogor. B. J. P. 183

निदान इस प्रकार की बहुत सी घटनायें बताई जा सकती हैं जिन से पता लग सकता है कि शाहजहाँ किस प्रकार का बादशाह था. हम इन बातों को केवल इसलिये ध्यान कर रहे हैं कि जब बादशाहों के चालचलन ऐसे गिरे हुए थे कि वह धोका, फरेब मक्कारी, और मार काट आदि और शराबो-कबाब, बदमाशी व्यभिचार से ज़रा भी न डरते हों तो प्रजा का चालचलन क्योंकर अच्छा रह सकता है। अगर ऐसे बादशाहों के आचरणों को देखकर भारतवासी आर्यत्व से गिर गये हों तो मैक्समूलर के आश्चर्य के लिये काफी वजह समझी जा सकती। विशेषकर औरङ्गज़ेब जो कि मुसल्मानों के नज़दीक बड़ा ईश्वर भक्त समझा जाता है, एक ऐसा पुरुष था जो इन बातों में गत पापियों से बढ़गया। हम इस मज़मून को अगले खण्ड के लिये छोड़ते हैं।

॥ तीसरा खण्ड समाप्त ॥

चौथा खण्ड

अन्याय की मूर्ति औरङ्गज़ेब

औरङ्गज़ेब और उसके जानशीन।

हम मैक्समूलर की हैरानी को सिद्ध करने के लिये शाहान इस्लाम के रहन सहन और उनके चालचलन के विषय में अपने पिछले मज़मून में किसी क़दर संक्षेप से काम ले चुके हैं। जिससे मालूम हो सकता है कि उक्त प्रोफ़ेसरकी हैरानी कितनी उचित है और कि शाहाने इस्लाम का चाल-चलन कैसा लज्जास्पद (शर्मनाक) था और उसने भारत-वासियोंपर कैसा ज़हरीला असर किया, मगर मि० निकोलाओ के कथनानुसार इस प्रकार की तमाम कार्रवाइयों के लिये, उनके सामने उनके मास्टर मुहम्मद की मिसाल मौजूद थी। मुसलमानों की दृष्टि में औरङ्गज़ेब एक पक्का दीनदार समझा जाता है। चुनाचे ज़्यादा अरसा नहीं हुआ कि एक कट्टर मुसलमान अख़बार ने कई मज़मून औरङ्गज़ेब को धर्मात्मा ज़ाहिर करने के लिये लिखे थे। अगर दीनदारी इसी बात का

नाम है कि कुरान की क़समें खाई जावें और उनको बार बार तोड़ा जावे और लोगों को कुरान की क़समें खाकर धोखा दिया जावे, मक्कारी फ़रेब से काम लिया जावे, भाइ बन्धुओं का चुन चुनकर क्रूरता से मार डाला जावे, बाप को कैदख़ाने में भी तरह तरह की तकलीफ़ें दी जावें और जो लोग उसके साथ भलाई करें उनको एक एक करके ज़हर देकर मारडाला जावे. प्रजा को बिना अपराध कष्ट दिया जावे. अगर दीनदारी के लिये यही गुण चाहियें तो हम भी मुसलमानों के साथ सहमत होते हैं। लेकिन अगर दीनदारी किसी और चीज़ का नाम है तो औरङ्गज़ेब को भेड़िया कहना बेजा नहीं होगा। जैसा कि हम साबित करेंगे। मगर चूंकि कुरान में इस प्रकार की तमाम घृणित कार्रवाइयों को उचित समझा गया है। बल्कि खुद अल्लामियाँ ने, जो कि कुरान का कर्त्ता है जगह जगह स्वयं इस प्रकार की अमली कार्रवाई करके दिखलाई हैं, जो कि मनुष्यता के बाहर हैं। इसलिये औरङ्गज़ेब ने, अपने पीर मुरशद का अनुसरण किया तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। इन मज़मूनों के लिखने से हमारा मतलब यह नहीं है कि हम मुसलमानोंके ज़माने को स्याह साबित करें। पिछले खण्ड में हम यह दिखा चुके हैं कि मुसलमान बादशाहों ने किस प्रकार अपने बान्धवों को धोखे से मारा और अपनी बहुतसी स्त्रियें तथा बाँदी और वेश्या आदि रखते हुए भी इन्होंने किस प्रकार अन्य पतिव्रता स्त्रियों का धर्म नष्ट किया।

औरङ्ग़ज़ेब यद्यपि ऐसा कामी नहीं था। परन्तु फिर भी उसने अपने भाइयों को मारने, पिता को कैद करने, अपने साथ उपकार करने वालों को धोखा देने आदि पाप कर्म्मों से इन सब की कसर पूरी करदी। किन्तु हम प्राचीन आर्य्यों की आत्मिक अवनति का ज़िक्र कर रहे हैं और इस अवनति के कारणों में से एक कारण आर्य्यवर्त में मुसलमानों की बादशाहत भी है। इसलिये हम इस अप्रिय अप्रासङ्गिक विषय को बीच में लाने के लिये मजबूर हुए हैं। इस विषय का एक भाग हम वर्णन कर चुके हैं। परन्तु दूसरा भाग औरङ्ग़ज़ेब और उसके स्थानापन्नों के लिये नियत है। आओ, ज़रा हम औरङ्ग़ज़ेब की ज़िन्दगी और उसके चरित्रों को पढ़कर किसी विशेष परिणाम पर पहुँचने का यत्न करें। इस विषय में हमारा पथप्रदर्शक वही मि० निकोलाओ होगा, जिसने औरङ्ग़ज़ेब के समय की स्वयं देखी हुई घटनायें लिखी हैं।

औरङ्ग़ज़ेब या सफ़ेद साँप की पैदायश।

औरङ्ग़ज़ेब की पैदायश के सम्बन्ध में एक विचित्र कहानी विख्यात है। जहाँगीर अभी ज़िन्दा ही था कि शाहज़ादे खुर्रम के यहाँ जो बाद में शाहजहाँ के नाम से मशहूर हुआ, दारा और शाहशुजा पैदा हुए। औरङ्ग़ज़ेब इन दोनों से छोटा था। जब इसके पैदा होने का समय नज़दीक आया, तो इसकी माँ

के एक विचित्र दर्द आरम्भ हुआ, जो पहले कभी नहीं हुआ था। जहाँगीर ने हुक्म दिया कि जब बच्चा पैदा हो, उसकी तत्काल ही ख़बर दी जावे। जब वह पैदा हुआ तो ख्वाजःसरा ने औरङ्गज़ेब के पैदा होने का समाचार सुनाया। वह भागा आया और बच्चे को देखकर बोला अगर यह ज़िन्दा रहा तो बड़ा ही बलवान् बादशाह होगा। जोकि तमाम हिन्दुस्तान को विजय करेगा। जहाँगीर की यह भविष्यवाणी बहुत कुछ पूर्ण हुई। परन्तु शाहजहाँ औरङ्गज़ेब से बड़ी घृणा करता था। चूँकि औरङ्गज़ेब दूसरे भाइयों से कुछ अधिक सुन्दर और गोरा था। इसलिये वह उसको घृणा के कारण मार रूफेद अर्थात् 'श्वेत सर्प' कहा करता था कई बार शाहजहाँने विचार किया कि इस दुष्ट सर्प को मार डालें, मगर उसकी बहिन के कहने से रुका रहता था। शाहजहाँ की घृणा का कारण अधिकतर यह था कि जब वह जहाँगीर से बाग़ी होकर दक्षिणमें फ़िसाद फैला रहा था। उस समय औरङ्गज़ेब शाह बीजापुर से मिल गया। इधर जहाँगीर मर गया और उसकी जगह ख़ुसरो— परवेज़ का लड़का था जहाँगीर का पोता सुल्तान दावरबख़्श सुल्तान बुलाकी के नाम से तख़्त पर बैठ गया। सुलतान दावरबख़्श ने तख़्त पर बैठते ही शाहबीजापुर के नाम हुक्म भेजा कि ख़ुर्रम को कैद करलो। शाह बीजापुर ने ख़ुर्रम को मय स्त्री बच्चों के कैद कर लिया। ऐसी बुरी दशा में जबकि उसका कोई मित्र व साथी नहीं था, उसकी एक बेग़म गर्भिणी थी। बेगम ने ख़ुर्रम से प्रार्थना की कि मेरा जी सेब खाने को

करता है। खुर्रम हैरान था कि सेव कहाँ से लाकर दे। दैव-योग से एक फ़क़ीर वहाँ आ निकला। उसने खुर्रम को दो सेव दिये। खुर्रमने उसको ईश्वर का भक्त समझकर पूछा कि मेरी औलाद में से कौनसा बेटा है जो मेरे वंश का उच्छेद करेगा। फ़क़ीर ने औरङ्गज़ेब की ओर संकेत करके कहा कि यह लड़का तेरे वंश का समूल नाश करेगा। बालक औरङ्गज़ेब की आयु उस समय नौ वर्ष की थी। शाहजहाँ ने चाहा कि औरङ्गज़ेब को मार डाले परन्तु उसकी बहन ने ऐसा करने से रोक दिया। जब एक अद्भुत प्रकार से शाहजहाँ ने शाह बीजापुर की कैद से छुटकारा पाया और देहली के तख़्त पर अधिकार करके तमाम दावेदारों को मार डाला। फिर उसने कन्धार को विजय करने का विचार किया रास्ते में एक फ़क़ीर ने शाहजहाँ से कुछ माँगा और कहा मैं भूखा हूं। शाहजहाँ उसको रुपया देने लगा। इस पर औरङ्गज़ेब ने मना कर दिया कि फ़क़ीर झूठ बोलता है, इसके पास चालीस रुपये मौजूद हैं। शाहजहाँ ने उसी समय फ़क़ीर की तलाशी ली। तो चालीस रुपये बरामद हुए। सब लोग हैरान थे कि औरङ्गज़ेब ने यह बात कैसे जानली। सबने इसको वली कहना शुरू किया। शाहजहाँ ने भी कहा कि अगर तुम इस फ़क़ीर से मिल नहीं गये हो तो निश्चय तुम वली हो, मगर बाद को मालूम हुआ कि औरङ्गज़ेब ने इस फ़क़ीर को पहलेही से सब पट्टी पढ़ाछोड़ी थी। शाहजहाँ औरङ्गज़ेब से और भी

नफ़रत करने लग गया और इसको धोखेबाज़ समझकर उस को सबसे छोटा पद दिया। औरङ्गज़ेब इस बात को देखकर जल गया। उसने दारा को, जोकि शाहजहाँ का बड़ा लड़का था और जिसे शाहजहाँ बहुत प्यार करता था मार डालनेकी ठानली। एक दिन वह भाला और तलवार लगाकर, महल के दरवाजे पर दारा के निकलने की बाट देखने लगा। दारा बाहर आया तो उसकी पालकी के पीछे घोड़े को दौड़ाया, दारा गिर पड़ा मगर बच गया। उसने बादशाह से इस बात का ज़िकर किया। बादशाहने बेटों में नाचाकी देखकर सबको अलग अलग कर देना चाहा। चुनाचे शाहशुजाको बङ्गाले का गवर्नर नियत करके रवाना कर दिया। मुराद को गुजरातका सूबेदार मुक़र्रर कर दिया। दारा को अपने पास रक्खा मगर औरङ्गज़ेब को मुलतान जैसे गर्म जिलों में फेंका, जहाँ वह कोई शरारत न कर सके। औरङ्गज़ेब ने मुलतान पहुँचकर अपने बड़े भाई दारा के नाम प्रेमपत्र लिखने आरम्भ किये। अपने कुकर्मों की क्षमा माँगी और प्रार्थना की कि अगर प्रिय भ्राता बादशाह से कहकर मुझे दक्षिण में भिजवादें तो मैं जीवन भर आपका कृतज्ञ रहूँगा। दारा बहुत ही नेक दिल, ईश्वर भक्त और उदार चित्त था। इसने बापके पास औरङ्गज़ेब की सिफ़ारिश की, मगर शाहजहाँ ने जवाब दिया कि तुम मूर्ख हो, तुम इस ज़हरीले साँप को दूध पिलाना चाहते हो, जो तुम्हारे डङ्क मारने से नहीं रुकेगा मगर दारा ने कहा कि मैं अपने प्रिय भ्राता को विपत्ति में नहीं देख सकता।

अन्त को शाहजहाँ ने औरङ्गज़ेब को दारा के कहने से दक्षिण में बदल दिया जहाँ उसने खूब दिल खोलकर बग़ावत के सामान इकट्ठे किये। लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिये वह कपट मुनि बनगया लम्बीर नमाज़ें पढ़ा करता ज़मीन पर सोता फ़कीराना वेष रखता, कुरान पढ़ने में लगा रहता, और सब से यही कहता कि मुझे राज की इच्छा नहीं मैं जल्द ही मक्के के हज को जाने वाला हूँ। मगर शाहजहाँ को इसकी इन बातों पर कभी यक़ीन नहीं आता था और वह उसको बड़ा फरेबी और मक्कार समझता था। साथ ही दारा के दिल में भी इस फ़कीर का बड़ा डर रहता था। दक्षिण में पहुँचकर उसने बुरहानपुर में रहना आरम्भ किया और रात दिन नई फोज भरती करता रहा। उसका गुरू शेख़मीर उसका सलाह देने वाला था। इधर उसकी बहन रोशनआरा बेगम उसकी तरफ से जासूसी का काम करती थी और दरबार की तमाम बातों से उसको विदित करती रहती थी। कुछ समय तक औरंज़ेब अपनी बनावटी भक्ति के होने पर भी खूब शराबो कबाब में लगा रहा। वह एक नाचने वाली लड़की पर आसक्त हो गया। इश्क में तमाम नमाज़ रोज़ा भूल गया! रात दिन शराब पीता, नाच देखता और ऐसेही कुकर्म करता रहा, यहाँ तक कि वह लड़की मर गई। औरंज़ेब फिर बगला भक्त बन बैठा। S. D. M. V. JP, 200-230.

शाहजहां की बीमारी और उसके बेटों का पैतृकस्नेह।

शाहजहाँ, जैसा कि हम पहिले लेखमें लिख चुके हैं, बड़ा कामी था। चूंकि इसके अंग शिथिल हो चुके थे, इसलिये बुढ़ापे में भी युवापन का आनन्द भोगने के लिये; इसने औषध और कुश्तों के द्वारा कामाग्नि का प्रचण्ड रक्खा। एक दफा सीमा से उल्लंघन करने के कारण उसका पेशाब बन्द होगया और तीन दिन तक बन्द रहा। हालत बड़ी नाज़ुक होगई, बचने की आशा नहीं रही। शाहजहाँ ने दरबार आना बिल्कुल बन्द कर दिया। क़िले के तमाम दरवाज़े बन्द कर दिये गये, और हुक्म दे दिया गया कि सिवाय दाराके और कोई अन्दर न आने पाये, और वह भी सिर्फ दिन के वक्त, रात के वक्त सिर्फ शाहजहाँ की बड़ी लड़की उसके पास रहती और दारा तक को अन्दर सोने की आज्ञा नहीं थी। शायद राज्य की कामना से वह उसको जल्दी ही मार डाले। शहर में यह चर्चा उड़ गई कि शाहजहाँ मर गया और दारा ने किसी कारण उसकी मौत को छिपा रक्खा है। यह खबर शाहजहाँके बेटों तक भी जा पहुँची। हर एकने तख़्त पर अधिकार करने को हाथ पाँव मारने आरम्भ किये। शाहशुजा सूबेदार बंगाल ने जोकि दारा का छोटा भाई था, फौरन चालीस हज़ार फौज के साथ दिल्ली की ओर कूंच करदिया और मशहूर करदिया

कि चूंकि दारा ने राज्य की इच्छा से मेरे बाप को मार डाला है, इसलिये अपने बाप के खून का बदला लेने को मैं उस पर चढ़ाई कर रहा हूं। इस बीच में शाहजहाँ की तबियत अच्छी होगई। जब उसने शाहशुजा की बग़ावत का हाल सुना तो उसको बहुत ही अफ़सोस हुआ। उसने अपने हाथ से अपने बाग़ी बेटेको ख़त लिखा कि मैं बिलकुल चंगा हूँ कुछ कमज़ोरी है तुम कुछ फिक्र न करो। अपने इलाके बंगालको लौट जाओ।

शुजा ने इस ख़त को जाली समझा, और बराबर आगे ही बढ़ा चला आया। जब शाहजहाँ ने देखा कि यह भूत सर से नहीं टलता तो उसने दारा के बड़े लड़के सुलेमानशिकोह को मय राजा जयसिंह के शुजा के दण्ड देने को रवाना किया राजा जयसिंह बड़ा बढ़िया सेनापति और नीतिज्ञ था। उस का नाम हिन्दुस्तान में सम्मान से लिया जाता था, बादशाह ने जयसिंह को समझाया कि हीले बहाने से शुजा को पीछे लौटा देना और लड़ाई तक नौबत न पहुँचने देना। मगर शुजा बातों से कब टलने वाला था. आखिर लड़ाई हुई जिसमें शुजा को नीचा देखना पड़ा और वह भाग निकला। सुलेमान शिकोह ने उसका पीछा किया। उधर गुजरात में सुलतान मुराद ने बग़ावत का झण्डा बुलन्द किया और आगरे की ओर चल पड़ा। मगर मुराद अपने बाप की तरह ज़्यादा औरतों में समय व्यतीत करने वाला था। वह कुछ अधिक अनुभवी नहीं था औरङ्गज़ेब ने उसको अपने जाल में फँसाना चाहा।

औरङ्गज़ेब की चालाकी और मक्कारी।

औरङ्गज़ेब की तमाम साज़िश बहुत ही छुपी और सोच विचार कर होती थी। जब वह दक्षिण का सूबेदार होकर बुरहानपुर पहुँचा तो उसने उसी समय से राज्य के लिये जोड़ तोड़ लगाने आरम्भ कर दिये, गोलकुण्डा की रियासत अभी स्वतन्त्र थी। शाह गोलकुण्डा ने मीर जुमला को अपनी फौज का सेनापति नियत कर दिया। मीरजुमला ने बादशाह के लिये बहुतसा नया इलाक़ा फतह कर दिया। परन्तु दूसरे अमीरों का मीरजुमला की बढ़ी हुई ताक़त पर जलन करनेका मौक़ा मिल गया। उन्होंने चाहा कि किसी तरह मीरजुमला को बादशाह की नज़र से गिरा दिया जावे। चुनाचे इस पर कलङ्क लगा दिया कि वह बादशाह की बेगम से बुरा सम्बन्ध रखता है। शाह गोलकुण्डा ने बिला किसी प्रकार के अनुसन्धान किये मीरजुमला की गिरफ्तारी का हुक्म दे दिया। मीरजुमला को पहिले ही से पता लग गया था कि बादशाह मुझसे शत्रुता रखता है। वह अपनी फौज को लेकर भाग निकला, और झट औरङ्गज़ेब से आ मिला। औरङ्गज़ेब ने मीरजुमला के कहने से गोलकुण्डा पर चढ़ाई करदी और शहर को घेर लिया। उधर शाहजहाँ को जब इस बात का पता लगा तो उसने यह ख्याल करके शायद गोलकुण्डे को फतह करके औरङ्गज़ेब स्वयं बादशाह होने का विचार न करने

लगे फौरन उसको लिख भेजा कि गोलकुण्डे को छोड़ दो और शाहशुजा से सुलह करलो, सुलह होगई, लेकिन मीरजुमला औरङ्गज़ेब के हाथ आ गया। औरङ्गज़ेब ने मीरजुमला को बादशाह के पास देहली भेज दिया बादशाह ने उसको वज़ीर (प्रधान) कर दिया और मुअज्जमखाँ का ख़िताब देकर फिरसे गोलकुण्डा बीजापुर और लङ्का के फतह करने के लिये बड़ी फौज का सेनापति नियत करके दक्षिण को भेज दिया और उनके साथ महाबतखाँ, सलाबतखाँ आदि को भी भेज दिया। अब औरङ्गज़ेब के हाथ में राज्य की प्रायः सारी सेना आगई मीरजुमला उसका अपना आदमी था, सलाबतखाँ आदि को उसने जोड़ तोड़ करके अपनी ओर कर लिया।

इधर शिवाजी को औरङ्ज़ेब ने सन्धि द्वारा गाँठ लिया कि अगर तुम इस अवसर पर चुप रहो तो मैं तुमको अपनी ओर से विशेष जागीर दूँगा। चूंकि सुलतान मुराद गुजरात में अलहदा फौज के साथ देहली की ओर कूंच कर रहा था। औरङ्गज़ेब ने मुराद की मूर्खता का फ़ायदा उठाना चाहा, और नीचे लिखा हुआ ख़त मुराद के नाम रवाना किया।

अज़ीज़ुलक़द्र शाहज़ादे मुरादबख़्श! आपको मालूम होगा कि दाराशिकोह ने हमारे बाप को ज़हर देकर मार डाला है और आप तख़्त पर क़ाबिज़ होगया है। इसी मतलब के लिये शाहशुजा बड़ी फौज लिये हुए दारा के साथ जंग करने के इरादे से आरहा है। मैं यह ख़त आपको लिखने के

लिये मजबूर हुआ हूँ, क्योंकि मेरे ख़्याल में आपके सिवा कोई दूसरा शख़्स बादशाह बनाये जाने के लायक़ नहीं है। दारा काफिर और बुतपरस्त है, वह दीने इस्लाम का दुश्मन है। शाहशुजा बेदीन है, क्योंकि वह हज़रत अली का मुक़ल्लिद और शिया होने की वजह से इस्लाम का मुख़ालिफ है। मेरे दिल में क़ुरान शरीफ के लिये खास जोश है। मैं चाहता हूँ कि आपको बादशाह बनाया जावे। तमाम दुनियां जानती है कि मैंने गोशेनशीनी इख़्तयार करली है और मैं अपनी ज़िन्दगी के बाकी दिन मक्के में गुज़ारना चाहता हूँ मेरी सिर्फ यही अरज़ है कि आपको तख़्त नशीन करूँ, लेकिन आप मेरे अयालो अतफ़ाल को हिफ़ाज़त करने का ज़िम्मा लें और कुरान शरीफ की कसम खायें कि आप इनको आराम से रक्खेंगे। मैं आप को हामिल हाज़ा के साथ एक लाख रुपया रवाना करता हूँ। ताकि हम दोनों भाइयों के दरमियान बाहमी उल्फ़त का निशान बाकी रहे। आपके जवाब का मुन्तज़िर हूं।

जब मुराद ने इस ख़त को पढ़ा तो मारे खुशी के जामे में फूला न समाया। उसने फ़ौरन औरङ्गज़ेब के पास इस मज़मून का एक ख़त रवाना कर दिया कि मैं कुरान शरीफ़ की क़सम खाकर लिखता हूं कि जैसा आप चाहते हैं वैसा ही होगा। मैं अपनी फौज को लेकर आप की तरफ़ आता हूं। ताकि हम दोनों भाई मिलकर दारा को हरा सकें। जब मुराद की तरफ़ से उसको दिलजमई होगयी तो शाही फौज के दूसरे सेनाप-

तियों को, जोकि उस समय दक्षिण में मौजूद थे इस साजिश में शरीक करने के लिये हाथ पांव मारे। मीरजुमला छिपा हुआ साजिश में शरीक था। अगर्चे वह प्रत्यक्ष में शाहजहाँ का पक्षपाती बना हुआ था। महाबतखाँ ने औरङ्गज़ेबको बातों को कुछ भी परवाह न की और वह सीधा आगरे चला आया, जहाँ से वह काबुल का सूबेदार नियत करके काबुल रवाना कर दिया गया। दूसरे सेनापतियों ने, यह जानकर कि शाहजहाँ अभी ज़िन्दा है, बग़ावत से इन्कार किया, मगर औरङ्गज़ेब ने उनसे कुरान की कसम ली कि अगर शाहजहाँ मर गया हो तो वह उसका साथ देंगे। सेनापतियों ने पचास दिन की मोहलत माँगी कि हम अपने आदमी भेजकर ख़बर मँगवाते हैं कि शाहजहाँ मर गया है या ज़िन्दा है। अगर वहाँ से यह ख़बर आयी कि वह मर गया है तो हम तुम्हारे साथ मिल जायेंगे। औरङ्गज़ेब जानता था कि शाहजहाँ ज़िन्दा है, इसलिये सिपहसालारों को धोखा देने के लिये इसने मिर्ज़ा अब्दुल्ला को, जोकि दरियाय नर्वदा के घाट का मोहर्रिर था लिख दिया कि देहली की तरफ़ से जितने आदमी दक्षिण की ओर आयें उनको रोक लिया जावे और जामा तलाशी लीजिये। अगर उनमें से किसी के पास ऐसी चिट्ठी निकले, जिसमें शाहजहाँ के ज़िन्दा होने की ख़बर दर्ज हो, तो चिट्ठी को जला दिया जावे। इस प्रकार औरङ्गज़ेब ने उन सिपहसालारों को धोखा दिया। जब पचास दिन गुज़र गये और दूत वापिस न आये, तो सिपहसालारोंने प्रतिज्ञानुसार औरङ्गज़ेब के साथ

शरीक होना स्वीकार कर लिया। दक्षिण की तमाम फौज को अपने बस में करके, औरङ्गज़ेब ने मुराद को भी चिट्ठियें भेजनी आरम्भ कर दीं। वह कुरान की कसमें खाता कि मेरा इरादा हरगिज़ बादशाह बनने का नहीं है बल्कि आपको बादशाह बनाकर मक्का चले जाने का है। मुराद का सेनापति शाहबाज़ख़ाँ इस तमाम कार्रवाई का शाकी था और केवल धोखा ख़्याल करता था और मुराद को औरङ्गज़ेब के फन्दे में न फँसने का आदेश करता रहा। मगर मुराद ने उसकी एक न सुनी। आख़िर औरङ्गज़ेब और मुराद दोनों फौजें लेकर माडों के मुकाम पर आ मिले। औरङ्गज़ेब ने मुराद की अगवानी की और उसके कदम चूमे। उसको शाह मुराद कहकर सम्बोधन किया, और आप हाथ बाँधकर उसके सामने खड़ा होगया। इस से मुराद और भी धोखे में आगया। इधर शाहजहाँ ने बीमारी से उठकर दोनों लड़कों को ख़त लिखे कि मैं ज़िन्दा हूँ तुम अपने अपने इलाक़ों को लौट जाओ। मगर औरङ्गज़ेब मुराद को यह कहकर धोखा देता रहा कि वह तमाम चिट्ठियें जाली हैं बादशाह मर गया है दारा उसकी मौत को छुपा रहा है। उधर शाइस्ताख़ाँ और मीरजुमला का लड़का मुहम्मद अमीनख़ाँ जो कि औरङ्गज़ेब के लिये जासूसों का काम कर रहे थे आगरे में मोजूद थे।

शाइस्ताख़ाँ, जिसको औरङ्ग ने (धर्म का) शाहजहाँ के ख़िलाफ़ किया था, बदले के जोश में भरा हुआ था वह चाहता था कि, शाहजहाँ को मज़ा चखावे। प्रत्यक्ष में तो वह शाह-

जहाँ का मित्र बना हुआ था, मगर छिपा२ औरङ्ग़ज़ेब से मिला हुआ था। इसने झूठ ही लिखमारा कि शाहजहाँ मर गया है तुम सुलेमान शिकोह के आगरा वापिस आने से पहिले, आगरे में पहुँच जाओ और किले पर कबज़ा करलो, यह खत दारा के हाथ आगया। दारा ने शाइस्ताखाँ को कैद कर लिया, करीब था कि इसको मार डाले कि औरङ्ग़ज़ेब की बहन रोशन-आरा ने जो कि खुद भी जासूसों का काम कर रही थी, दारा को समझाया कि शाइस्ताखाँ बेकसूर है और किसी ने इसके नाम से जाली खत लिख दिया है। दारा जोकि बिल्कुल सीधा साधा था इस लड़की के धोखे में आगया। उसने शाइस्ताखाँ को छोड़ दिया, अगर्चे बाद में दारा को, अपनी इस महरबानी पर बहुत पछताना पड़ा। शाहजहाँ की तमाम फौज औरङ्ग़ज़ेब के जासूसों से भरी हुई थी, जो कि ज़रा२ सी बातों को औरङ्ग़ज़ेब तक पहुँचाते रहते थे। इनमें एक खलीलुल्लाखाँ भी था। जब शाहजहाँ ने देखा कि बाग़ी लड़के किसी तरह बग़ावत से नहीं रुकते तो उसने दारा को फौज तैयार करने का हुक्म दिया। फौज तैयार हो गई, मगर शाइस्ताखाँ और खलीलुल्लाखाँ जैसे सेनापति जिनको औरङ्ग़ज़ेब ने रिश्वतें दे रक्खी थीं, वक्त पर दग़ा कर गये, फ़ौज तैयार हो गई। शाह-जहाँ ने खुद मैदान जंग में जाकर लड़ना चाहा, मगर खली-लुल्लाखाँ को ज्योंही इस बात का पता लगा उसने दारा के कान में फूँक मार दी कि अगर बादशाह मैदान में जाकर लड़ेगा तो फतह उसके नाम से होगी, आपको क्या मिलेगा,

अच्छा हो कि मैदान आप अपने हाथ में रक्खें और बादशाह को वहाँ जाने से रोकें। दारा इसके फँदे में फँस गया और शाहजहाँ को मैदान में जाने से रोक दिया। शाहजहाँ चूंकि दारा को अत्यन्त प्यार करता था, इसलिये उसने दारा की बात को मान लिया और तमाम अधिकार अपने बेटे को दे, इसको रवाना किया। दारा ने दरियाय चम्बल पर पहुँचकर दरिया के तमाम नाके रोक लिये। औरङ्गज़ेब की फौज को पार करना मुशकिल होगया। इतने में उसका पता लगा कि राजा चम्पावत के इलाके में से होकर नदी पार करना सहल होगा राजा चम्पावत से ख़तोकिताबत शुरू हुई। औरङ्गज़ेब ने उसके साथ बड़े बड़े वायदे किये। राजा उसके जाल में फँस गया और उसकी फ़ौज़ को अपने इलाके से गुज़रने और दरियाय चम्बल को पार करने की आज्ञा देदी। औरङ्गज़ेब ने राजा चम्पावत की मदद से दरिया को पार किया। जब उसने देखा कि फौज पार हो चुकी है तो दूसरे दिन प्रातःकाल राजा को बुला भेजा, राजा खुश था कि अब हम को इनाम आदि से मालामाल किया जावेगा। औरङ्गज़ेब ने हुक्म दिया कि राजा चम्पावत को पकड़लो और जिस रास्ते से फौज गुज़रना है उस रास्ते में राजा का सर काट कर डालदो ताकि मुहूर्त शुभ हो। राजा को मारकर उसका सर रास्ते में डाल दिया गया। इधर जब दाराको पता लगा कि चम्पावतने औरङ्गज़ेब को रास्ता दे दिया है तो बहुत क्रोधित हुआ। उसने फौरन हुक्म दिया कि बारह हज़ार सिपाही अभी औरङ्गज़ेब के साथ

लड़ने के लिये रवाना हो जावें, मगर ख़लीलुल्लाख़ाँ दग़ाबाज़ ने अशुभ घड़ी का बहाना करके फौज रवाना करने में देर की। वह चाहता था कि औरङ्गज़ेब अच्छी तरह फौज को ठहरा ले तो आना ठीक होगा। इसमें शक नहीं कि दारा अगर इन दग़ाबाज़ों के कहने में न आता तो वह औरङ्गज़ेब का बिलकुल सत्यानाश कर देता, क्योंकि उसकी फौज कुछ अच्छी नहीं थी और वह दिन रात के सफ़र से थकी माँदी थी। मगर ख़ली-लुल्लाख़ाँ ने औरङ्गज़ेब के साथ भेज कर रक्खा था, कि आप जब लड़ाई के लिये तय्यार हो जावें तो तीन तोपें दाग़ देना उस वक्त मैं दारा से टाल मटोल करता रहूंगा। जब ही दारा लड़ाई के लिये तैयार होता ख़लीलुल्लाख़ाँ टाल देता कि अभी शुभ मुहूर्त नहीं वर्षा होनी है आदि। इधर इन टालमटोलों से औरङ्गज़ेब को पूरा मौका मिल गया। इसने अपनी फौज को खूब तैयार कर लिया। जब देखा कि अब सब काम लैस है तो उसने रात के समय तीन तोपें छोड़ीं, जिससे ख़लीलुल्लाख़ाँ को पता लग गया कि अब औरङ्गज़ेब लड़ाई के लिये तैयार है। दूसरे दिन लड़ाई शुरू हुई। दाराकी फौज अगर्चे नमकहरामों और दग़ाबाज़ों से भरी हुई थी, मगर फिर भी उसके कुछ सिपाही ऐसे जान तोड़कर लड़े कि औरङ्गज़ेब की फौज के छक्के छुट गये और वह भाग निकली। उस वक्त ख़लीलुल्लाख़ाँ ने दारा को दग़ा दी उसके पास जाकर कहने लगा कि अल्ला ताला की मदद से मैदान मार लिया है औरङ्गज़ेब अब हमारे

हाथ में आ जायेगा और हाथी परसे उतरकर घोड़े पर सवार हो जावें ताकि हम जल्दी से औरङ्गज़ेब को गिरफ्तार कर सकें दारा इस फरेब को न समझा। वह घोड़े पर सवार हो गया इधर जब दारा की फौज ने दारा का हाथी खाली देखा तो उन्होंने यह समझा कि दारा मारा गया। फ़ौज बेदिल हो गई और भाग निकली, जीता हुआ मैदान हाथ से जाता रहा। जब दारा ने ख़लीलुल्लाख़ाँ की बेईमानी को देखा तो उसको बड़ा क्रोध आया, और उसने ख़लीलुल्लाख़ाँ को बुला भेजा मगर ख़लीलुल्लाख़ाँ उस वक्त तक औरङ्गज़ेब के पास चला गया था दारा हारा और आगरे को वापिस लौट गया शाहजहाँ को इस हार से बड़ा दुःख हुआ। औरङ्गज़ेब ने दारा को कुछ भी मुहलत न दी और वह आगरे की तरफ रवाना हो पड़ा। अब औरङ्गज़ेब को सिर्फ सुलेमान शिकोह और राजा जैसिंह की फौज का डर शेष था, जोकि शाहशुजा के पीछे पड़ी हुई थी। उसने जैसिंह और दिलेरख़ाँ को लिखा कि चूंकि दारा की हार हुई है उसका ख़याल छोड़ दो। सुलेमान शिकोह को गिरफ्तार करके मेरे पास रवाना कर दो। जयसिंह और दिले-रख़ाँ दारा की हार का हाल सुनकर हैरान थे कि क्या किया जावे। वह सुलेमान शिकोह पर हाथ डालने के लिये तय्यार नहीं थे, मगर साथ ही वह दारा की ख़ातिर मुफ्त जान देने को भी अच्छा नहीं समझते थे। उन्होंने औरङ्गज़ेब की चिट्ठी सुलेमान शिकोह को दिखा दी। सुलेमान अपने सेनापतियों से

अविश्वासी हो गया और वह अविश्वासी कुछ चन्द आदमियों को साथ लेकर कश्मीर की तरफ भाग गया। इस तरफ सुलेमान शिकोह की तमाम फौज भी औरङ्गज़ेब के साथ जा मिली। दारा को अगर पहिले कोई आशा थी, तो वह भी जाती रही। शाहजहाँ ने दारा को देहली जाने और वहाँ के क़िले को सँभालने की इजाज़त दी और देहली के क़िलेदारके नाम ख़त लिखा कि क़िले की कुञ्जियां दारा को देदो, मगर देहलीवालों का औरङ्गज़ेब ने पहिले ही रिश्वत देकर अपने साथ मिला लिया था जब दारा देहली पहुँचा तो देहली के दरवाज़े अपने विरुद्ध बन्द पाये अब उसको इसके सिवाय कुछ न बन पड़ा पञ्जाब को भाग जावे। लाहौर पहुँच कर उसने नये सिरे से फौज भरती करनी शुरू की।

—:०:—

औरङ्गज़ेब का पिता को दुःख देना और अत्याचार करना।

पीछे दिखाया जा चुका है कि औरङ्गज़ेब ने क़ौल क़रार होने पर भी राजा चम्पावत को, जिसने कड़े वक़्त पर उसकी मदद की थी, पकड़ कर मार डाला था। अब जब दारा उस के सामने से भाग गया तो औरङ्गज़ेब को कुछ फुरसत मिली वह झट आगरा पहुँचा। शहर को घेर लिया। मगर वहाँ था ही कौन? जो उसके मुक़ाबले में आता, सिर्फ क़िले के अन्द

बन्द सिपाही थे, जिन्होंने क़िला बन्द कर लिया और औरङ्गज़ेब का सामना करने को तयार हो गये औरङ्गज़ेब ने यह देख कर कि लोग उसकी तरफ से अविश्वासी हो रहे हैं, क्योंकि उसने बादशाह के जीते जी तख़्त पर क़ब्ज़ा करने की ठानी थी, धोखा और फरेब से काम करना शुरू किया और शाहजहाँ को मुआफ़ी के खत भेजने शुरू किये। इधर क़िले के आदमियों का जोड़ तोड़ करके अपने साथ मिला लिया और प्रकट यह किया कि मैं बादशाह से मिलकर तमाम बातों का फैसला करके लोट जाऊँगा। मुद्दत तक मुलाकात को बहानों में टालता रहा। आख़िर जब देखा कि क़िले पर अधिकार होगया है; तो उसने बादशाह को लिख भेजा कि मैं नहीं आ सकता; मेरी जगह मेरा लड़का सुलतान मुहम्मद आपकी मुलाक़ात को आता है सुलतान मुहम्मद को समझा दिया कि दरवाज़े में घुसते ही जो सबसे पहिले सामने आये मार डालना और बादशाह पर क़ब्ज़ा कर लेना। सुलतान मुहम्मद किले में गया, जो सामने आया मार डाला गया। शाहजहां ने जब यह नक़शा देखा, तो हैरान रह गया चूंकि इस समय सिवाय ख्वाजासराय अबदुल्लाखाँ और उसकी औरतों के जो गिनती में दो हज़ार थीं, कोई मौजूद नहीं था, इसलिये उसने इरादा किया कि दुष्टों के साथ लड़ता हुआ मर जावे। इधर अब औरङ्गज़ेब को पता लगा कि सुलतान मुहम्मद ने रनवास पर भी कबज़ा कर लिया है, तो झट उसको लिखा कि कुंजियां ले लो और बादशाह को ज्यादा तंग न करो।

सुलतान मुहम्मद ने किले की तालियां ले लीं और शाहजहाँ को छोटे से कमरे में बन्द करके चारों तरफ डबल पहरा लगा दिया। शाहजहाँ ने औरङ्गज़ेब को फिर लिखा कि एक दफ़ा मुझसे मिल जाओ मगर इस बार औरङ्गज़ेब ने ख्वाजासरा एतबारखाँ को विशेष आज्ञा देकर रवाना किया। एतबारखाँ शाहजहाँ का गुलाम था मगर शाहजहाँ ने उसको औरङ्गज़ेब के सुपुर्द कर दिया था इस नमकहराम ने शाहजहाँ को और भी तंग किया और उसको एक तङ्ग तारीक कमरे में बन्द कर के तमाम खिड़कियें और दरवाज़े चुनवा दिये सिर्फ रौशनी और भोजन अन्दर जाने को कुछ रास्ता खुला रक्खा। बाद को अपने बाप को अपराधी साबित करने को औरङ्गज़ेब ने शाहजहाँ के नाम से कई जाली चिट्ठियाँ दारा के नाम लिखीं कि तुम आगरे से ज़्यादा दूर मत जाना। औरङ्गज़ेब और मुराद मुझसे मिलने आयेंगे, मैं उन दोनों को मार डालूंगा, तुम आकर तख़्त को संभाल लेना। औरङ्गज़ेब ने मक्कारी से इन चिट्ठियों को जो उसकी ही राय से लिखी गई थीं, ठीक उस समय अपने सामने पेश करने का तरीका निकाला जब कि सब दरबारी मौजूद हों, और ज़ाहिर यह किया कि यह चिट्ठियाँ पकड़ी गई हैं। औरङ्गज़ेब ने इन चिट्ठियों को सब के सामने पढ़ा और बज़ाहिर उसपर भय छा गया उसने अमीरों और वज़ीरोंसे पूछा कि मुझे शाहजहाँसे मिलनेके लिये जाना चाहिये या नहीं। पहिले अगर किसी को शाहजहाँ से कुछ हमदर्दी थी तो इन जाली चिट्ठियों को सुनकर वह भी जाती रही। सब

ने एक जुदान होकर कहा कि आपका शाहजहाँ से मिलने जाना भय की बात है। औरङ्गज़ेब ने रोती सूरत बना कर एक ख़त शाहजहाँ के नाम लिखा कि मेरा इरादा आपको हानि पहुँचाने का नहीं है सिर्फ दारा को जिसने आपको दुःखी कर रक्खा था, दण्ड देने का था, मैं दारा को पकड़कर आपके पास रवाना करूँगा और खुद अपने इलाके को लौट जाऊँगा। मेरी तरफ से यदि कोई अनुचित व्यवहार हुआ हो तो आप क्षमा करें। यह ख़त सबके सामने पढ़कर सुना दिया गया मगर औरङ्गज़ेब की हरगिज़ यह इच्छा नहीं थी कि शाहजहाँ को यह खत मिले यह केवल मक्कारी से अमीरों वज़ीरों के दिल अपनी ओर खींचना चाहता था और इस प्रकार के कपटों से उसको विशेष लाभ हुआ जब उसने देखा कि लोगों ने शाहजहाँ का साथ छोड़ दिया है और शाहजहाँ अब कठिन बन्दीगृह में है, उसके निकलने के तमाम रास्ते बन्द हैं तो उसने दारा की जड़ उखाड़ने और मुराद को भी निराशता दिखाने के विचार करने शुरू किये। अब तक यह मुराद को यही धोखा दे रहा था कि मैं आपको तख़्त पर बिठाकर मक्के चला जाऊँगा। वह इसके सामने कुरान की कसमें खाता और उसके कदमों में गिरकर सलाम करता हाथ बाँधे उसके सामने खड़ा रहता अपने रुमाल से उसका पसीना पोंछता और नौकरों की तरह उसकी सेवा करता. गोया कि मुराद बादशाह था और औरङ्गज़ेब उसका गुलाम। मुराद के दिल में भाई के ऐसे बर्ताव को देखकर, कब यह सन्देह पैदा हो सकता था कि वह एक

दिन उसको धोखा देगा। मगर मुराद का ख़्वाजासरा शह-बाज़ख़ाँ जो कि बड़ा वफ़ादार और बुद्धिमान पुरुष था, औरङ्गज़ेब की मक्कारी को ख़ूब जानता था। उसने दफ़ा कई चाहा कि औरङ्गज़ेबको मौका पाकर मार डाले। उसने मुराद से भी कहा कि आप औरङ्गज़ेब का एतबार न करें। मगर मुराद ऐसा मूर्ख और और बादशाह बनने के नशे में चूर था कि उसको शहबाज़ख़ाँ की बातें बुरी लगती थीं और वह उसकी तरफ से मुँह फेर लेता था। एक दिन मुराद ने औरङ्गज़ेब से कहा कि अब, चूँकि मैदान साफ़ हो गया है, अब तख़्त नशीनी की रसम पूरी हो जाना चाहिये। औरङ्गज़ेब ने अत्यन्त कपट से प्रसन्नता की और फ़ौरन जुलूस की तैयारी का हुक्म दिया। चूँकि मुग़ल बादशाह ज्योतिषियों के कहने पर ज़्यादा चलते थे, और हर काम को शुरू करने से पहले शुभ लग्न को देख लिया करते थे। औरङ्गज़ेब मुसलमान होने पर भी इस वहम से ख़ाली नहीं था। उसने दरबार के ज्योतिषियों को गाँठ लिया और उनसे कहा कि तुम अपने ज्योतिष के ज़रिये यह बताओ कि अभी कुछ दिन ख़राब हैं, तख़्त नशीनी अभी नहीं होनी चाहिये। चुनांचे उधर जुलूस की तय्यारी हो रही थी, इधर औरङ्गज़ेब ने ज्योतिषियों को बुला कर नियमानुसार शुभ लग्न देखने को कहा। सबने अर्ज़ की कि अभी कुछ दिन यह रस्म पूरी नहीं होनी चाहिये। औरङ्गज़ेब ने हाथ जोड़कर मुराद के पास जाकर ज्योतिषियों का कहा हुआ निवेदन किया। वह तो था ही मूर्ख, उसने

लाया। इस ही तरह दूसरी दफ़ा उसको लालच देकर फिर अन्दर भेजा कि वह ख़ंजर भी उठा लाये, लड़का ख़ंजर भी ले आया। अब मुराद बिलकुल निहत्ता रह गया। छः आदमी अन्दर गये और उन्होंने उसके पाँव में बेड़ियां डालना शुरू कीं मुराद चौंक पड़ा। उसने अपना हाथ सरहाने की तरफ़ अपनी तलवार उठाने का बढ़ाया, मगर तलवार पहले ही ग़ायब थी। सर्द आह भर कर बोला—क्या इसी धोखे के लिये मुझ से वादा किया गया था और कुरान की क़समें खाई जाती थीं? मगर वहां कौन सुनता था। औरङ्गज़ेब ने प्रातः काल ही मुराद को बन्द हौदे में सवार करवा देहली की तरफ़ रवाना कर दिया। दूसरा हाथी उसी वक्त आगरे की तरफ़ भेजा था कि किसी को पता न लगे कि मुराद आगरे की तरफ़ जाने वाले हाथी पर है या देहली की तरफ़ जाने वाले हाथी पर। मुराद जबरदस्त क़ैद में देहली पहुंचा। हौदे का परदा उठा दिया गया। मुराद क़ैदियों की तरह शहर में घुमाया गया। बाद में सलेमगढ़ के क़िले में क़ैद कर दिया गया। औरङ्गज़ेब ने हुक्म दिया कि इसको पानी की बजाय तेज़ पोस्त का पानी पिलाया जावे ताकि वह जल्द ही होशो-हवास खोकर पागल होजाय। मुराद के साथ ऐसा ही अन्यायपुक्त बर्ताव जारी रक्खा गया यहाँ तक कि उसको औरङ्गज़ेब ने बाद में बेरहमी से मार डाला।

औरङ्गज़ेब का भेड़ियापन निडरपन और अन्याय।

इधर शाहजहाँ कैद था, उधर मुराद से पीछा छूटा। शाहशुजा बङ्गाले में मारा २ फिरता था दारा का बेटा सुलेमान शिकोह कश्मीर की शरण में था और दारा लाहौर के क़िले में था। औरङ्गज़ेब ने फौरन अपने आप को बादशाह मशहूर कर दिया और एक ज़बरदस्त फौज लेकर पञ्जाब की ओर चल पड़ा। दारा ने बहुत सी फौज जमा कर ली थी, औरङ्गज़ेब ने इस जगह भी मक्कारी से काम लिया। उसने दारा के सेनापति दाऊदखाँ की ओर से एक जाली चिट्ठी तय्यार कराई; जिसमें औरङ्गज़ेब को लिखा था कि "आप कुछ फिक्र न करें, जब आप लाहौर पहुँचेंगे तो मैं दारा का सर आप की सेवा में उपस्थित कर दूंगा" औरङ्गज़ेब ने यह जाली ख़त इस तरह से रवाना किया कि वह दारा के हाथों में पड़ गया। दारा ने ज्यों ही इस ख़त को पढ़ा वह दाऊदखाँ और दूसरे सरदारों से फिर गया। जब दाऊदखाँ को इस बात का पता लगा तो वह बहुत ही दुःखित हुआ। वह फ़ौरन समझ गया और रोकर कहने लगा कि यह ख़त बिलकुल जाली है। आप इस पर विश्वास न करें। दारा ने दाऊदखाँ की बात को मान लिया। लेकिन उस का अपने अफ़सरों की तरफ़ से

कहा अच्छा अभी न सही । मगर औरङ्गज़ेब कुछ और ही सोच रहा था उसने प्रिय भाई से कहा कि बेहतर हो कि इतने में हम दारा को गिरफ्तार करलें ताकि निर्भय आप राज्य करें । मुराद ने भी इस तजवीज़ को पसन्द किया, फ़ौरन फ़ौज तैयार होगई और दारा के पीछे चल पड़ी । जब मथुरा पहुँची तो ज्योतिषियों के कहने के अनुसार बुरी घड़ी गुज़र गई और शुभ लग्न आगई । औरङ्गज़ेब ने मथुरा में ही कैम्प लगा दिया और बड़े ज़ोर शोर से मुराद की तख़्तनशीनी की तैयारियां शुरू हुईं । खूब महफिल सजाई गई । मुराद के लिए तख़्त और ताज हाज़िर थे । औरङ्गज़ेब उसके पीछे खड़ा मोरछल हिला रहा था । बार बार रूमाल से उसका पसीना पोंछता और अत्यन्त आधीनी से बातें करता गोया कि वह एक तुच्छ सेवक था । रात को शराबोक़बाब की महफिल गर्म हुई । औरङ्गज़ेब ने मुराद को अपने कैम्प में बुलाया और ख्वाजेसराओं और दूसरी औरतों को समझा दिया कि मुराद को खूब शराब पिलाओ । मुराद शराब के नशे में चूर होगया और आधी रात को सोगया । उसका वफ़ादार ख्वाजेसरा शहबाज़ बराबर नंगी तलवार का पहरा देता रहा । आधीरात के समय औरङ्गज़ेब ने मुराद की जान लेने के लिए शैतानी छल शुरू किया । सबसे पहिले ज़रूरी था कि शहबाज़ को मुराद के सरहाने से अलग किया जावे । औरङ्गज़ेब ने मुराद के ख़ेमे के दरवाज़े पर चार

मज़बूत सिपाही नियत कर दिये और उनको सब ऊंच नीच समझा दी। फिर एक सफ़ेद कुरता पहने सादा टोप सिरपर रक्खे बड़ी गम्भीरता से मुराद के ढेमे के दरवाज़े के अन्दर गया। वह कुछ कहने आया है, मान, यह देखकर कि मुराद सो रहा है और अपने प्रिय भाई की नींद में बाधा डालना नहीं चाहता। उसने शहबाजखाँ को उङ्गली से इशारह किया, जिससे मालूम होता था कि वह उसके कान में कुछ ज़रूरी बात कहना चाहता है। शहबाज फ़ौरन दरवाज़े के बाहर आया। दरवाज़े पर चार सिपाही पहिले ही मौजूद थे उन्होंने फौरन शहबाज का काम तमाम कर दिया और शोर नहीं होने दिया। जब वफ़ादार शहबाजख़ाँ मारा गया तो अब मुराद का कोई भी सहायक नहीं रहा। मुराद की तलवार और ख़ंजर उसके सरहाने पड़ी थीं। औरङ्गज़ेब ने मुराद को इन दोनों हथियारों के रहित करना चाहा। उसने अपने बेटे मुहम्मदआज़म को जिसकी आयु उस दिन १५ जून सन् १६५८ ई० को केवल ४ साल ७ दिन की थी, अपने पास बुलाया और गोदी में बिठा कर कहा कि अगर तुम चुपके से अपने चचा के सरहाने से तलवार उठा लाओ तो मैं तुमको यह चीज़ दूंगा। औरङ्गज़ेब ने यह मक्कारी इस लिये की थी कि अगर ईश्वर न करे मुराद जाग पड़े तो यह समझले कि एक कम उम्र बच्चा उसकी तलवार से खेल रहा है और उस को शुबा करने की गुंजायश न रहे। बच्चा तलवार को उठा

निकला। गुजरात के इलाके से निकल कर वह चाहता था कि फ़ारस चला जावे उसने सरदार जीवनखाँ की मदद चाही। जीवनखाँ को दारा ने दो दफ़ा मौत के मुंह से बचाया था, क्योंकि बादशाह ने इसको हाथी के पाँव के तले रुंदवाने का हुक्म दिया था। दारा को निश्चय था कि जीवनखाँ अवश्य उसकी सहायता करेगा। जीवनखाँ ने प्रत्यक्ष में तो उसका बड़ा सत्कार किया परन्तु फिर धोखे से क़ैद कर बहादुरखाँ के हवाले कर दिया। यह देखकर उसकी प्यारी स्त्री ने जिसने तमाम विपत्तियों में भी उसका साथ न छोड़ा था, आत्मघात कर डाला। दारा क़ैदी होकर बाल बच्चों सहित देहली पहुँचाया गया। औरंगज़ेब ने निहायत ही दुर्दशा के साथ इसको गलीकूंचों में अपमानित किया, बाद को ख़िज़राबाद के क़िले में क़ैद कर दिया। चूंकि लोग दारा से मुहब्बत करते थे, इस लिये औरंगज़ेब ने चाहा कि लोगों का जोश ज़रा कम होजावे। एक दिन औरंगज़ेब ने दारा के पास एक आदमी भेजा और पूंछा कि अगर तुम मुझे इस तरह क़ैद कर लेते जिस तरह तुम मेरी क़ैद में हो, तो तुम मेरे साथ क्या बर्ताव करते? दारा ने राजसी शब्दों में उत्तर दिया कि—"तुम्हारे जिस्म के चार टुकड़े करके शहर के चारों कोनों में लटकवा देता।" यह सुनकर औरंगज़ेब का ख़ून उबल पड़ा। उसने हुक्म दिया कि कौन दारा का सर काट कर मेरे पास लावेगा? उसी वक़्त नाज़िरबेग, मक़बूल, फ़तेहबहादुर

मशहूर मुहरन आदि जो कि गुलाम और गुलामों की औलाद थे, उस काम के करने को रवाना होगये। इन राक्षसों ने जब कि दारा अपने कमरे में टहल रहा था, पकड़ लिया और ज़मीन पर डाल कर इस तरह उसका सर काट लिया जिस तरह एक क़साई भेड़ का सर काट लेता है। औरंगज़ेब ने हुक्म दिया कि सर को धोकर और पगड़ी बांध कर रकाबी में रख कर मेरे पास लाओ; जिस से मैं पहचान सकूँ कि यह दारा का सर है या और किसी का। रात को आठ बजे थे. औरंगज़ेब कुरसी पर अपने बाग़ में बैठा था कि उन दुष्टों ने तश्तरी में दारा का सर रख कर हाज़िर किया। औरंगज़ेब ने चिराग़ की रोशनी में सरको पहचाना और ज़मीन पर रखवा कर अपनी तलवार से तीन बार ठोकर लगाई और अत्यन्त घृणित शब्दों में कहा कि क्या यही दारा है जो मुग़लिया राज्य का बादशाह बनना चाहता था, लेजाओ इसको मेरे सामने से। दारा के धड़ को उसने हुमायूँ के मक़बरे में गढ़वा दिया मगर सर को एक सन्दूक में बन्द कर के एतबारखां के पास जो कि शाहजहां के पहिरे पर मुकर्रिर था और जिसके सुपुर्द शाहजहां के भोजन का प्रबन्ध था भेज दिया और कहा जिस समय शाहजहां खाना खाने लगे, उसके सामने यह सन्दूक रख देना और कह देना कि औरंगज़ेब ने आपके लिये कुछ सौगात भेजी है। चुनांचे एतबारखां ने ऐसा ही किया। जब शाहजहां खाना खाने

फिर भी सन्देह बाक़ी रहा। औरङ्गज़ेब ने अब अपनी पहिली चाल को निकम्मा पाया, तो उसने झट एक ख़त दाऊद के नाम लिखा और इस तरह रवाना किया कि वह दारा के हाथ में पड़ जावे। उसका लेख यह था कि—"आपने इतनी देर क्यूं लगाई है, अभी तक आपने दारा को गिरफ्तार करके मेरे पास क्यूं रवाना नहीं किया" जब यह ख़त दारा के हाथ में पड़ा, फिर तो वह और भी घबड़ा गया, समझा कि मेरी फौज के तमाम अफसर औरङ्गज़ेब से मिले हुए हैं। वह कुछ सिपाहियों को साथ लेकर लाहौर से मुलतान पहुंचा। औरङ्गज़ेब ने लाहौर पर कबज़ा कर लिया और लाहौर से मुलतान की तरफ़ दारा के पीछे गया। दाराको मुलतान भी छोड़ना पड़ा। उस ने भाग कर जाने की ठानी। उधर औरङ्गज़ेब को खबर मिली शुजा आगरे पर कबज़ा करने को चल पड़ा है। उसने बहादुरखाँ को दारा के पीछे छोड़ दिया और स्वयं आगरे की तरफ़ चलपड़ा। संयोग से राजा जयसिंह भी अपनी फ़ौज के साथ आगरे की तरफ़ शाहजहाँ की मदद के लिये जारहा था। मार्ग में दोनों की भेंट होगई। औरङ्गज़ेब के साथ उस समय केवल तीन आदमी थे, बाक़ी फ़ौज पीछे थी। राजा जयसिंह के आदमियों ने चाहा कि अब मौक़ा है, औरङ्गज़ेब को मार डाला जावे तो बहुत ही अच्छा हो। राजा जयसिंह अगरचे शाहजहाँ का तरफ़दार था मगर चूंकि दारा की तरफ़ से उसको कुछ सदमा पहुँचा हुआ था, इसलिये उसने औरङ्गज़ेब

को मारने से इन्कार कर दिया कि राजपूत इस तरह निहत्थे आदमी पर कभी तलवार नहीं उठा सकता। औरङ्गज़ेब राजा जयसिंह के ऐन कब्ज़े में था, अगर चाहता तो एक ही हाथ से उसका सर काट डालता; मगर उसने ऐसा नहीं किया। औरंगज़ेब ने अपनी हालत नाज़ुक देखी समझा कि काम बिगड़ गया। पहिले की तरह कपट से काम लिया। राजा जयसिंह के पास पहुँच कर बोला "राजाजी ! मैं तो मुद्दत से आप की खोज में था, ईश्वर की कृपा से आज दर्शन हुए। दारा के पीछे तो मैंने बहादुरखाँ को लगा दिया है वह उसको बिना गिरफ्तार किये नहीं छोड़ेगा। आप साँभर के सूबे पर अधिकार करलें आपका वहां जाना ज़रूरी है।" यह कह कर औरंगज़ेब ने अपनी कीमती माला गले से उतार कर राजा जयसिंह के सुपुर्द की। जयसिंह दारा का दुश्मन था, उसको क्या मतलब दारा मरे चाहे शाहजहां वह सीधा साँभर की तरफ़ रवाना होगया। इस तरह औरंगज़ेब ने अपनी जान बचाई। बहादुरखाँ बराबर दारा का पीछा किये गया। दारा भक्कर पहुँचा। वहाँ भी अपने क़दम जमते न देखकर हज़ारों मुसीबतों को झेलता हुआ अहमदाबाद पहुँचा; अहमदाबाद के दरवाज़े बन्द पाये। फिर गुजरात की तरफ़ भाग निकला; मगर उधर बहादुरखाँ डबल कूंच करता हुआ उसके पीछे आरहा था। आखिरकार दारा घिर गया और दोनों के बीच घोर संग्राम, हुआ। दारा की फौज हारी मगर वह जान बचा कर भाग

सकतो थ । बहुतसा हिस्सा भाग गया । आखिर मुक़ाबिले से घबड़ा कर शाही फ़ौज के सेनापति ने सुलह का सन्देसा भेजा। महाराजा ने कहा सुलह मंजूर है, बशर्ते कि तमाम सिपाही अपने २ हथियार रख कर नाक कटवाते जावें । फ़ौज ने जान खोने की बजाय हथियार और नाक खाने पसन्द किये । एक २ मुसलमान सिपाही सामने आता हथियार रखदेता और राजा के सिपाही उसकी नाक काट कर छोड़ देते। इस तरह राजा ने तमाम मुसलमानों की नाकें काट कर देहली भेज दिया । शाहजहाँ इस घटना को देख कर बड़ा हैरान हुआ । इसके बाद उसने कभी भी कश्मीर पर चढ़ाई करने का इरादा न किया।

महाराजा ने औरङ्गज़ेब को इसी की याद दिलाई । औरङ्गज़ेब ने देखा कि लड़ाई से मतलब हासिल नहीं हो सकता। इसलिये उसने स्वभावानुसार कपट से काम लेना चाहा। महाराजा का लड़का बड़ा बदचलन था, महाराजा ने उसको उसके कुकर्मों से रोका था । इसलिये वह बिगड़ बैठा । औरङ्गज़ेब ने उसको गाँठ लिया और कहा कि अगर तुम सुलेमान शिकोह को मेरी सुपुर्द करदो तो मैं तुमको गद्दी पर बिठालने में सहायता दूंगा । इस नालायक़ ने सुलेमान को पकड़वाने की तैयारी की। सुलेमान को भी पता लगगया। इसने काशग़र के रास्ते चीन को भागजाने का इरादा किया; मगर राजा के लड़के ने कुछ सिपाहियों के

साथ इसे पकड़ लिया और औरङ्ग़ज़ेब के सुपुर्द करदिया। जब महाराजा को अपने बेटे की इस हरकत का पता लगा तो वह बड़ा दुःखी हुआ। अपने बेटे की बेईमानी पर उस को इतना दुःख हुआ कि वह कुछ दिनों ही में मरगया। औरङ्ग़ज़ेब ने सुलेमान शिकोह को अपने सामने बुलाया ताकि देखले कि सुलेमान शिकोह ही है या कोई और। जब सुलेमान औरङ्ग़ज़ेब के सामने आया तो इसने इस ख़ूबसूरत शाहज़ादे को ग़ज़ब की निगाह से देखा। सुलेमान रोपड़ा और दया करने की प्रार्थना की। मगर औरङ्ग़ज़ेब जैसे ज़ालिम और हत्यारे के दिल में दया कैसी? उसने सुलेमान को ग्वालियर के क़िले में बन्द कर दिया और बाद को ज़हर देकर मार डाला। जब दारा और उसकी औलाद का अन्त कर चुका तो औरङ्ग़ज़ेब ने जिसको कि उसकी ख़ूंख्वारी के कारण भेड़िया कहना ठीक होगा, अपना ख़ून से भरा मुँह शाहशुजा की ओर फेरा। शाहशुजा बङ्गाले में था, औरङ्ग़ज़ेब की हरकात को देख कर उसने भी लड़ाई की तैयारी की। इलाहाबाद के समीप लड़ाई हुई। औरङ्ग़ज़ेब ने नीचा देखा। मगर मीरजुमला ने जो औरङ्ग़ज़ेब से मक्कारी में कम नहीं था, शाहशुजा के सेनापति अलीविरदाखाँ से साजिश गाँठी और कहा कि अगर तुम लड़ाई के मैदान में शाहशुजा को हाथी से उतार कर घोड़े पर सवार करादो तो तुम्हारी सेवा की प्रशंसा की जावेगी। जब कि औरङ्ग़ज़ेब की फ़ौज हारकर

लगा, तो पतवारखां ने वह खूबसूरत छोटा सन्दूक जिस में दारा का सर रक्खा था, शाहजहां के सामने रख दिया कि आपके बेटे ने आप के लिये कुछ सौग़ात रवाना की है। शाहजहां ने कहा—खुदा मेरे बेटे को चिरायु करे जो इस संकट के समय भी अपने बाप को नहीं भूला। यह कह कर उस ने सन्दूक का ढकना उठाया, मगर ज्यूं ही उसने देखा कि उस में दारा का सर है वह चीख़ मार कर मेज़ पर गिर पड़ा और उसके दांत टूटगये। दारा की बड़ी बहन भी दुःख से मूर्छित होगई। तमाम महल में रोना पीटना पड़ गया। शाहजहां को उठाकर अन्दर लेगये। जब उसको चेत हुआ तो उसने अपनी डाढ़ी नोचनी शुरू की। तमाम चेहरा लोहूलुहान होगया। पतवारखां ने इन तमाम बातों को औरंगज़ेब से आकर ज़िकर किया। वह सुनकर बहुत ही खुश हुआ। चुनांचे इस खुशी में उसने और उसकी दुष्टा बहिन रोशनआरा ने उस रात को बड़ा आनन्द मनाया औरंगज़ेब ने दारा का सर मुमताजमहल के रौज़े में दफ़न करवा दिया।

औरङ्गज़ेब की खूँख्वारी।

पीछे लिखा जा चुका है कि दारा का बेटा सुलेमान शिकोह जिसने शाहशुजा को शकिस्त देकर भगा दिया था,

अपने सेनापतियों की नमक हरामी से डर कर काश्मीर को भागगया था वह अभी तक काश्मीर में ही था। जब औरंग-ज़ेब दारा का खून पीचुका तो उसने सुलेमानशिकोह का काँटा भी दिल से निकालना चाहा । चुनाचे उसने कश्मीर के राजा को लिखा कि सुलेमानशिकोह को मेरे पास हाज़िर करदो; वरना अभी फ़ौज लेकर चढ़ आऊंगा और तुम्हारी जानोमाल की ख़ैर नहीं होगी । महाराजा कश्मीर ने जवाब दिया कि बेहतर है कि मैं मारा जाऊं और मेरा राज्य भी नष्ट होजावे। बनिस्वत उसके कि मैं एक शख्श को जिसने मेरी शरण ली है शत्रु के हवाले कर दूं। मुझे औरंगज़ेब की धमकियों की कुछ परवा नहीं है। औरंगज़ेब को याद रखना चाहिये कि जिस राजा ने उसके बाप शाहजहां की भेजी हुई २०००० बीस हजार सवार और एक लाख प्यादा फ़ौज की नाक काट ली थी, वह उनके सर भी काट सकता है। औरंगज़ेब इस जवाब को सुन कर चुप रह गया । मुनासिब मालूम होता है कि इस जगह पर शाहजहां की कश्मीर पर चढ़ाई का ज़िक्र कर दिया जावे । शाहजहां ने कश्मीर को जीतने के लिये एक बड़ी फ़ौज भेजी । महाराजा कश्मीर ने सामना करने की जगह पीछे हटजाना मुनासिब समझा । जब तमाम फौज पहाड़ी में घुसगई तो राजा ने आगे और पीछे के पहाड़ी नाके बन्द कर लिये और चारों ओर से रसद बन्द करदी। शाही फौज न आगे जा सकती थी न पीछे हट

कर देने का पूरा इरादा कर लिया । शाहजहां जिस कमरे में कैद था, उसमें एक खिड़की थी जो कि दरिया की ओर खुली थी। शाहजहाँ प्राय. दिल बहलाने के लिए उस खिड़की में बैठ जाया करता था। औरङ्गज़ेब ने हुक्म दिया कि खिड़की बन्द करदी जाव और उसके नीचे बन्दूकची नियत कर दिये जो कि हर वक्त बन्दूकें छोड़ते रहते थे, ताकि शोर से शाहजहां चैन की नींद भी न सो सके. साथ ही उसके हुक्म था कि शाहजहां कभी इसमें आकर बैठे तो फौरन उसके गोली मारदो।

क़िले में जितना ख़ज़ाना था वह सब औरङ्गज़ेब ने शाहजहां के सामने निकलवाना शुरू कर दिया । खूब शोर किया जाता और गुल मचाया जाता। मगर शाहजहां भी इन बातों को समझता था। वह भी इसी तरह रहता था कि गोया उसको किसी की परवाह ही नहीं है। औरङ्गज़ेब के आदमी जितना ज़्यादा शोर मचाते उतना ही वह अपने गाने बजाने वाली औरतों के नाच रंग को ज्यादा गर्म कर देता था। जब औरङ्गज़ेब ने देखा कि बूढ़ा मरने में ही नहीं आता तो उसने ज़हर के ज़रिये उसका काम तमाम कर देना चाहा । उसने ज़हर मँगवाया और अपने ख्वाजासरा फ़हीम के हाथ वह ज़हर मय अपनी दस्तख़ती चिट्ठी के मुकर्रमख़ां के पास रवाना कर दिया । मुकर्रमख़ां शाहजहां का अपना निजी हकीम था और शाहजहां ने उस पर बहुत सी कृपायें की थीं।

वह अपने भलाई करने वाले का शुभचिन्तक था । औरङ्गज़ेब ने उसको लिखा कि अगर तुम अपनी कुशल चाहते हो तो फ़ौरन वह ज़हर शाहजहां को खिलादो ताकि वह मरजाये। अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो तुम्हारे लिए अच्छा नहीं होगा मुकर्रमख़ां ने सोचा कि जिस शाहजहां ने मेरे साथ नेक बर्ताव किया है, यह कमीनगी और विश्वासघात है कि मैं उसको ज़हर दूं । बस बेहतर यही है कि औरङ्गज़ेब ने जो ज़हर अपने बाप के लिये मेरे पास भेजा है, मैं उसको खुद ही खालूँ, ताकि मैं वफ़ादार रहकर मरूँ । उसने ज़हर खुद खालिया और आध घंटे के अन्दर मरगया । औरङ्गज़ेब खुश था कि अभी शाहजहां के मरने की ख़बर मुझे मिलेगी; मगर जब उसको पता लगा कि असिल बात क्या हुई ? तो बहुत ही अफसोस किया । इसलिए नहीं कि मैंने कोई बुरा काम किया था, बल्कि इस लिये कि उसका बाप बच रहा । इससे बढ़कर शर्मनाक पितृघात का उदाहरण शायद दुनियां में कोई न होगा। एक शख़्श शाहजहां से कुछ पारितोषिक पाकर इसके लिये जान देदेता है । दूसरा इससे ज़िन्दगी पाकर और इसका बेटा कहलाकर इसकी जान लेता है । औरङ्गज़ेब से बढ़कर कुपूत और कौन होसकता है। वह सिर्फ़ कुपूत ही नहीं था, परन्तु अव्वल दरजे का कृतघ्न (मोहसिन कुश) भी था। इसकी मिसालें कुछ पीछे दिखाई जाचुकी हैं। मगर वह काफ़ी नहीं हैं । औरङ्गज़ेब को अपने भाई दारा पर

भागी जारही थी अलीविरदीखाँ ने शाहशुजा के साथ वही मक्कारी की जो ख़लीलुल्लाखाँ ने दारा के साथ की थी शाहशुजा का हाथी पर से घोड़े पर सवार होना था कि तमाम फ़ौज में खलबली पड़गई कि शाहशुजा मारा गया। कहां तो औरङ्गज़ेब की फ़ौज भाग रही थी, कहाँ अब शाहशुजा की फ़ौज उल्टे पाँव भाग निकली। यह देखकर मीरजुम्ला ने हमला बोल दिया। शाहशुजा के पाँव उखड़ गये और उसको जीत की जगह हार मिली। मगर उसने अलीविरदीखां की नमकहरामी का खूब ही बदला लिया; उसी समय उसको सामने बुलाकर मरवा डाला। शाहशुजा ने कई दूसरे मौकों पर मोर्चा बन्दी की मगर प्रारब्ध ने उसकी सहायता न की। आखिरकार उसको अपनी जान बचा कर अराकान को भागना पड़ा। अराकान के राजा ने उसका बड़ा ही आदर सम्मान किया। मगर बाद में कुछ तो औरङ्गज़ेब की शाजिशों से और कुछ अपने कर्मों से शाहशुजा मै बालबच्चों के अराकान में मारा गया और इस तरह शाहशुजा के कुटुम्ब का नाम संसार से मिट गया। औरङ्गज़ेब ने जब सब तरफ़ से इतमीनान होगया तो बड़ी खुशी से अपने नाम का सिक्का जारी किया और उस पर यह शेर लिखा।

सिक्के ज़द दर जहाँ चूँ बदरे मुनीर।
शाह औरङ्गज़ेब आलमगीर॥

औरङ्गज़ेब के जंगलीपन की इन्तहा।

गुज़श्ता निहायत ही थोड़े से मगर दुःखमय बयान में औरङ्गज़ेब की खूंख्वारी के कुछ उदाहरण दिये गये हैं, जिन में उसका जङ्गलीपन दिखलाया गया है। मगर उसका जङ्गलीपन यहीं तक ख़तम नहीं होगया था। बल्कि उसने अपने बाप को क़ैद में कठिन दुःख दिये। वह उसके नाम ऐसी चिट्ठियां लिखता था, जिनको पढ़कर बूढ़ा बादशाह अत्यन्त दुःखी होता था औरङ्गज़ेब अपने ख़तूत में ज़ानी (व्यभिचारी) कुकर्मी और अन्यायी तक लिखने से नहीं चूकता था। मगर शाहजहां भी ऐसे दाँत तोड़ जवाब देता था कि औरङ्गज़ेब को पगड़ी सम्भालनी पड़ती थी। ओ ज़ालिम! तूने अपने भाइयों का खून किया अपने बाप को क़ैद किया अभी तक तुझ को तसल्ली नहीं मिली आदि २ मगर औरङ्गज़ेब को वास्तव में तसल्ली नहीं मिली थी। एक दफ़ा शाहजहां सख़्त बीमार होगया। हकीमों ने तजवीज़ की कि आबोहवा बदलना चाहिए और औरङ्गज़ेब से सिफारिश की कि शाहजहां को कश्मीर की हवा मुफ़ीद पड़ेगी। मगर औरङ्गज़ेब इतना दयालु कहां था जो हकीमों की बात को सुनता या अपने बाप के साथ किसी प्रकार की नरमी करता। बजाय कशमीर भेजने के उसने उसकी ज़िन्दगी का ख़ातमा

दांग पर विजय खलीलुल्लाखां से की वजह प्राप्त हुई थी। खलीलुल्ला को भी आखिरकार ज़हर देकर मार डाला। राजा जयसिंह ने जो प्रशंसनीय सेवायें औरङ्गज़ेब की की थीं, वह किसी से छिपी नहीं हैं। यह जयसिंह ही था, जिसने औरङ्गज़ेब को जीवन प्रदान किया जबकि उसके सिपाहियों ने उस को मार डालना चाहा था, यह जयसिंह ही था, जिसने शिवाजी को नीचा दिखाया था; यह जयसिंह ही था जिसने शाहशुजा को हराकर औरङ्गज़ेब को उसके पंजे से बचाया था। यह जयसिंह ही था, जिसने औरंगज़ेब की खातिर सुलेमानशिकोह की फ़ौज को औरंगज़ेब के हवाले कर दिया था; यह जयसिंह ही था, जिसने सुलेमानशिकोह को औरंगज़ेब के सुपुर्द कर दिया था। यह जयसिंह ही था, जिसने उस समय जब कि औरंगज़ेब दुबारा शाहशुजे के हाथ से तंग आ रहा था, उसको बचाया; वह जयसिंह ही था जिसने अपनी जेब से रुपया खर्च करके शिवाजी के विरुद्ध लड़ाई करके मुग़लों का सिक्का बिठाया। मगर इसी बहादुर जयसिंह को इस दुष्ट अन्यायी पिशाच औरंगज़ेब ने ज़हर देकर मारडाला। राजा जयसिंह की मौत के बाद औरंगज़ेब ने हिन्दुओं पर खूब दिल खोल कर अन्याय करने शुरू किये। चूँकि राजा यशवन्तसिंह के दम में दम बाकी था इस लिये वह फिर भी किसो कदर डरता रहता था संयोगवश उन्हीं दिनों में यशवन्तसिंह का देहान्त हो गया फिर तो

औरङ्गज़ेब के अन्याय की कोई हद नहीं रहीं। उसने यशवन्त-सिंह के लड़कों को जबरदस्ती मुसलमान बनाना या मार डालना चाहा। क्यों कि इसके पास सिवाय मुसलमानी या तलवार के और कोई बीच की चीज़ ही नहीं थी। जिन राजाओं ने औरङ्गज़ेब की वफ़ादारी और नम्रतामें खून पसीना पसीना एक कर दिया, उनके और उनकी औलाद के साथ इस अकृतज्ञ बक़ौल शाहजहाँ मूज़ी साँप ने ऐसा अन्याय युक्त बर्त्ताव किया कि न केवल उनके साथ बल्कि तमाम हिंदू रिआया के साथ अत्यन्त ही अमानुषी बर्त्ताव किया। उसने हुक्म दे दिया कि मेरे राज्य में कोई भी हिन्दू मन्दिर न रहने पाये। हिन्दुओं के मन्दिर तुड़वादिये गये या मस्जिदों में बदल दिये गये। बनारस और मथुरा के बहुत से बड़े २ मन्दिर तोड़ कर मस्जिदें बनाई गई। तमाम हिन्दुओं पर, जिनकी उम्र १४ वर्ष से ऊपर थी जज़िया लगा दिया गया। जज़िया दरअसिल क्या चीज़ थी इसका खुलासा हाल तो हम अगले काण्ड में करेंगे, लेकिन यहाँ हम सिर्फ इतना ही बता देना चाहते हैं कि यह जज़िया अत्यन्त कठोरता से वसूल किया जाता था। हरएक सौदागर १३॥) हरएक बीचीकी दशा के हिंदू को ७) और हरएक गरीब को ३॥) सालाना जज़िया अदा करना पड़ता था। जज़िया इतना कठोर नही था जितनी कि वह सख्ती और बेइज़्ज़ती जो कि इसके वसूल करने में की जाती थी, हिन्दुओं को ज़लील और बेइज़्ज़त किया जाता

था। जज़िया वसूल करने वाले उनकी औरतों को बेइज़्ज़त करते थे। जो कोई अदा नहीं कर सकता था या तो जेल में भेजा जाता था या मुसलमान बना लिया जाता था। करोड़ों आदमी आये दिन की सख़्ती से तंग आकर मुसलमान होगये हिन्दुस्तान के मुसलमान ज़्यादातर इसी ज़माने के मुसलमान हैं। इन्हीं कठोरताओं के कारण न केवल हिन्दू ही औरंगज़ेब से घृणा करते थे बल्कि मुसलमान भी औरंगज़ेब को अच्छा नहीं समझते थे। औरंगज़ेब ने बहुतसा रुपया और नज़राना शरीफ़ मक्के की सेवा में भेजा, मगर शरीफ़ मक्के ने उसको पापी समझ कर रुपया लेने से इन्कार कर दिया औरंगज़ेब ने इस रुपये से लाहोर की आलीशान मसजिद बनवाडाली।

(औरङ्ग़ज़ेब का दूत शाहफ़ारिस के दरबार में)

शरीफ़ मक्के ने औरंगज़े[illegible] को दुत[illegible]

जब शाहजहां मर गया, तो औरंग[illegible] ने [illegible]

फ़ारिस के पास भेजा, जिस से शाह फ़ारिस [illegible]

स्थापित करे। फ़ारिस के लोग [illegible] हैं मगर सुन्नियों के से संकुचित विचार के और द्वेषी नहीं हैं। शाह अब्बास औरंगज़ेब की हरकतों को बतौर एक मुसलमान के बड़ी घृणा की दृष्टि से देखता था। इसने औरंगज़ेब जैसे भ्रातृघातक और पितृघातक मनुष्य के दूत की कुछ परवा नहीं की। दूतका

नाम तरबियतखां था। जब तरबियतखां शाह अब्बास के सामने आया तो वह घोड़े पर चढ़ कर चल दिया। तरबियत खाँ पीछे भागता रहा। जब एलची (दूत) से बात चीत करने का मौका आया तो शाह अब्बास ने औरंगजेब के एलची के सामने औरंगजेब की बड़ी निन्दा की, उसको मक्कार कपटी, झूँठा, अन्यायी और नीच बताया, और और कहा कि शाह फारिस की बदौलत उसको हिन्दुस्तान का राज्य मिला है। क्योंकि अगर शाह फ़ारिस हुमायूँ की मदद न करता तो मुग़लिया राज्यका कहीं पता भी नहीं चलता। यह सुनकर तरबियतखाँ ने भी जो हाज़िर जवाब था, कहा कि आखिर मुगलों की बदौलत ही आप को फ़ारिस का राज्य मिला है। क्योंकि अगर तैमूरलँग आपके पुरुषाओं को फ़ारिस के सिंहासन पर न बैठा जाता तो आज आप बादशाह न होते। शाह अब्बास इस उत्तर को सुन कर बहुत प्रसन्न हुआ। इसने हुक्म दिया कि तरबियतखाँ को शराब का प्याला बतौर इनआम के दिया जावे। औरङ्गजेब. शराब नहीं पीता था, यही हाल तरबियतखाँ का था तरबियतखाँ को शराब का प्याला नजर करना उसका बड़ा अपमान था। मगर शाह अब्बास तो चाहता था कि इसको खूब तँग करना चाहिये, ताकि औरंगजेब के पास जाकर शिकायत करे। तरबियतखाँको जबरदस्ती शराब पीनी पड़ी। इससे पहिले औरंगजेब ने भी इसी प्रकार की जबरदस्ती शाह फ़ारिस के

दूत के साथ की थी वह इस ही का बदला था। शाह अब्बास तरबियतखाँ से अकसर इसी प्रकार की अपमानयुक्त ठट्ठोली करता रहा। औरङ्गज़ेब ने तरबियतखाँ के साथ दो आदमी बतौर गुप्तचर के भेजे थे, जो कि तमाम हालत लिखते जाते थे। एक दिन शाह अब्बास ने पूछा कि तुम्हारे साथ यह दो आदमी कौन हैं। तरबियतखां ने जवाब दिया कि गुप्तचर हैं जो कि बादशाह ने मेरे साथ रवाना किये हैं यह सुन कर शाह अब्बास हँस पड़ा कि तुम बड़े मूर्ख और बुरे आदमी हो। औरङ्गज़ेब ने तुम पर एतबार न करके तुम्हारे साथ यह रिपोर्टर भेजे हैं। तुम दूतके पदके योग्य नहीं हो। अब दूत की खूब मट्टी ख़राब की जाचुकी तो एक दिन शाह अब्बास ने अपने दरबार में बुलाया ताकि अन्तिम वार्तालाप करके उस को विदा करदे। तरबियतखाँ की डाढ़ी शरई वज़े की लम्बी चौड़ी थी। शियालोग डाढ़ी नहीं रखते। शाहे अब्बास सूरज छुपने के बाद तक बातें करता रहा। बात करने के बीच में शाह अब्बास ने तरबियत से बूझा कि तुम्हारे पास औरङ्ग-ज़ेब की कोई तसवीर और सिक्का भी है। तरबियतखाँ ने एक छोटी सी तसवीर और एक अशरफ़ी निकाल कर शाहे अब्बास के सामने पेश की जिस पर कुछ लिखा हुआ था। चूंकि अँधेरा होचुका था, इस लिए उसने चिराग़ मंगवा कर तरबियतखाँ से कहा कि ज़रा पढ़ो तो इस पर क्या लिखा है। एक आदमी चिराग़ लेकर खड़ा होगया। शाह

अब्बास ने उसको समझा रक्खा था कि जिस समय तरबियतखाँ पढ़ने लगे तो तुम फिसलने के बहाने से चिराग़ उसकी डाढ़ी को लगा देना ताकि उस मोमिन की हजामत हो जावे। तरबियतखाँ ने मुहर के ऊपर से यह शेर पढ़ कर सुनाया।

सिक्का ज़द दरजहां चूँ बदरे मुनीर।
शाहे औरङ्गज़ेब आलमगीर॥

अब दूत पढ़ चुका तो चिराग़ वालेके पैर कांपे मानो कि वह गिरने वाला है और झट चिराग़की लौ तरबियतखाँ की डाढ़ी में आ लगी, सफ़ाई होगई। तरबियतखाँ बिगड़ने लगा, मगर क्या कर सकता था शाह अब्बास ने हँस कर कहा घबड़ाते क्यूं हो, हमारे यहाँ हज्जाम बहुत हैं, तुम्हारी डाढ़ी का जो नुकसान हुआ है सो भर देंगे। बाद को तसवीर और अशरफ़ी तरबियतखाँ के हाथ से लेली उसको देखा और सख़्त हिकारत और क्रोध से औरङ्गज़ेब की तसवीर पर थूक दिया और तरबियतखाँ के सामने जमीन पर फैंक कर अपने गुलामों को हुक्म दिया कि इस तसवीर को जूतों से पीटो, क्यों कि यह ऐसे मनुष्य की तसवीर है जो मानके योग्य नहीं है। अशरफ़ी को देख कर उसने दूत से कहा कि इस पर इबारत ग़लत लिखी है यह इबारत होनी चाहिये।

सिक्का ज़द दरजहां बर क़ुर्से पनीर।
औरङ्गज़ेब बिरादरकुश व पिदरगीर॥

शाहे अब्बास ने औरङ्गज़ेब की तसवीर और सिक्के के साथ वही सुलूक किया जिस सलूक का कि औरङ्गज़ेब अधिकारी था। दूत अत्यन्त लज्जित होकर फ़ारस से औरङ्गज़ेब के पास पहुँचा। औरङ्गज़ेब बड़ा झुंझलाया, दाँत पीसे मगर क्या कर सक्ता था। हम औरङ्गज़ेब के अन्यायों की नामावली को बढ़ाना नहीं चाहते। ऊपर के थोड़े ही बयान से भले प्रकार प्रकट है कि औरङ्गज़ेब, जो मुसलमानों के के समीप दीनका रक्षक कहाता है और अत्यन्त आदर की दृष्टि से देखा जाता है, वास्तव में मनुष्य कहाने का भी अधिकारी था या नहीं। जिस कौम के सामने औरङ्गज़ेब जैसे भ्रातृघातक, पिता को कैद करने वाले दुःख देने वाले; भलाई करने वाले को मारने वाले, अन्यायी, कपटी, जाली छली मनुष्य उदाहरण के लिए मौजूद हों, उस जाति की सभ्यता का अनुमान कर लेना कुछ भी कठिन नहीं है, ऐसे बादशाहों के समय में हिन्दुओं का शैतान न बन जाना वास्तव में एक चमत्कार है। और मैक्समूलर की हैरानी बेजा नहीं है। माना कि हिन्दू शैतान नहीं बन गये मगर उन में से एक बड़ा भारी हिस्सा मुसलमान तो जरूर बन गया यह औरंगज़ेब की यादगार समझना चाहिए।

औरङ्गज़ेब की मौत।

अन्त में इस प्रकार का अन्याय, जङ्गलीपन नृशंसता आदि कठोरता करते यह असम्भव था कि औरङ्गज़ेब की आत्मा को शान्ति मिल सकती चुनांचे उस की मृत्यु, महमूद ग़ज़नवी की मृत्यु से कुछ कम भयानक न थी और दुनियाँ में इस प्रकार के अन्यायों का अन्त हीं बुरा हुआ है। मरते समय औरङ्गज़ेब की हालत कैसी शोचनीय थी, उसका किसी कदर अनुमान उन चिट्ठियों से लग सकता है। जो कि उसने अपने बेटों के नाम लिखी थीं। हम उन में से केवल दो चिट्ठियों का अनुवाद देते हैं। उन में से एक चिट्ठी शहज़ादे आज़म के नाम है। और वह यह है।—

खुदा आपको सलामत रक्खे मैं बहुत बूढ़ा और कमज़ोर होगया हूं मेरे आज़ा सुस्त होगये हैं जब मैं पैदा हुआ था तो मेरे चारों तरफ़ बहुत से आदमी थे, मगर अब मैं अकेला जा रहा हूँ। मैं नहीं जानता हूं कि मैं क्यों पैदा हुआ, और किस लिये इस दुनियां में आया? मेरी तमाम उम्र ज़ाया हो गई; खुदा मेरे दिलमें था, मगर मेरी अन्धी आँखोंने उसे नहीं देखा। उम्र थोड़ी है गुजिश्ता वक्त वापिस नहीं आ सकता। मुझे जिन्दगी का भरोसा नहीं। हरकात आती रहीं; महज़ चमड़ा और हड्डियाँ बाकी हैं। मैं खुदा से दूर उफ्तादा (दूर फेंका हुआ) हूं। मेरे दिल में बिलकुल चैन नहीं। मैं

इस दुनियां में कुछ भी नहीं लाया, मगर अपने सरपर गुनाहों की गठरी ले चला। मैं नहीं जानता हूँ कि मुझे अपने गुनाहों को क्या सजा मिलेगी? गो मैं खुदा के रहम पर भरोसा रखता हूँ। मगर मैं अपने गुनाहों पर नादिम हूँ" ओह कैसी शोचनीय दशा! वह औरङ्गजेब जिसने मत के पक्षपात से अन्धा होकर, लाखों मनुष्यों को दुःख दिया धर्म भ्रष्टकिया; जिसने अपने भाइयों का खून पिया, अपने बाप को बुरी तरह मारा अपने तमाम शुभचिन्तकों को विष दिया, ऐसे पिशाचका अगर मरते समय आराम मिल जाता तो समझो कि ईश्वरीय नियम टूट गया। मगर नियम नहीं टूट सका है। औरङ्ग़ज़ेब जैसा नराधम,पिशाच पापी और कुकर्मी मनुष्य स्वय समूल नष्ट होगया। उस की दीनदारी उसका मत सम्बन्धी द्वेष, उस का पक्षपात उस का कपट उसके जरा भी काम न आये। मालूम होता है कि उसके सब अन्याय सदेह उसके सामने आगये थे चुनांचे शाहज़ादे कामबख्श के नाम जो खत लिखा है उसमें वह लिखता है:—

"मेरी जान की जान! मैं अकेला आरहा हूं तुम्हारी बेकसी का अफ़सोस है; मगर अफ़सोस करने से क्या हासिल? मैंने लोगों को सताया है, जितने मैंने गुनाह किये हैं, और जितना ज़ुल्म किया है, मैं उसका नतीज़ा साथ ले चला हूँ। अफ़सोस मैं दुनिया में खाली आया मगर चलते वक्त गुनाहों का बोझा सर पर लेचला। मैंने बहुत गुनाह किये हैं, मालूम नहीं मुझे क्या सज़ा मिलेगी?" यह पारितोषिक (इनाम) था

जो उस दीनदार को मिला था उसका दिल उसको धिक्कार रहा था। वह अपनी दृष्टि में स्वयं ही पिशाच और कलङ्कित बन रहा वह अपने तमाम कुकर्मों पर जोकि उसने धर्म को आड़ में किये थे लज्जित हो रहा था। आख़िर वह तमाम पापों का बोझ लेकर इस संसार को एक राक्षस से ख़ाली कर गया और शाहजहाँ के कथनानुसार जिसने इतने मनुष्यों को डसा था, इतने निरपराधियोंका रुधिर पिया था, आख़िर वह आप भी मृत्यु का ग्रास हो गया। उसकी मौत के थोड़े ही काल के पश्चात् उसकी बनाई हुई या बिगड़ी हुई मुगलोंकी सल्तनत भी समूल नष्ट होगई। आज वहाँ घास फूंस का एक तिनका भी नज़र नहीं आता।

औरङ्गज़ेब और उसके जानशीन।

औरङ्गज़ेब या उसके पुरुषाओंने मारकाट का पेड़ लगाया था, वह समय पर अपना फल देने के बिना नहीं रह सकता था। जब औरङ्गज़ेब के अन्यायों का उसकी मृत्यु के साथ अन्त होगया, तो उसका बेटा मुहम्मद, मुअज़िजम तख्त का स्वामी बना उसने भी औरङ्गजेब की तरह अपने दोनों भाइयों को मारडाला। और तख्त के लिये जिस क़दर बाकी दावेदार थे, सब का सर क़लम कर दिया. मुहम्मद मुअज़्ज़म शाह आलम, चालचलन के लिहाज़ से शाहजहाँ आदि से कुछ

कम नहीं था शाह आलम के बाद उसका बेटा जहाँदार तख्तपर बैठा। उसने भी नियमानुसार अपने भाइयों को मार डाला। मगर संयोग से फ़र्रुख़सियर इसके हाथ से बच गया। फ़र्रुख़सियर ने दूसरे साल ही आगरे के समीप जहाँदार को हराकर मारडाला। फर्रुख़सियर के मददगार सैय्यद अब-दुल्ला और सैय्यद हसनअली थे। दोनों सैय्यदों ने बाद में फ़र्रुख़को ही मार डाला। दूसरे अमीरों ने अपनी बारी में इन दोनों सैय्यदों को भी मार डाला। फ़र्रुख़सियरने सिक्खोंपर अत्यन्त ही अन्याय किये उनको ढूंढ २ कर मारा। एक २ सिक्ख के लिये इनाम मुकर्रिर किया था; मगर सिक्ख भी अपने धर्म में पक्के थे, मरते थे और उफ़ नहीं करते थे। आख़िरकार मुहम्मद शाह रंगीला जो कि व्यभिचार का अवतार था, तख्तपर बैठा। मुहम्मदशाह के काल में नादिर-शाह ने भेड़ बकरी की तरह देहली वासियों को काटा। नादिरशाह बड़ा जल्लाद और धोखेबाज था और इन गुणों में किसी भी मुसलमान बादशाह से कम नहीं था।

मुहम्मदशाह की अय्याशी का अन्त हुआ तो अहमदशाह का शासन आरम्भ हुआ। पठानों ने फिर हाथ पाँव फैलाये, दिल्ली पर अधिकार करके गुलामक़ादिर ने शाहआलमसानी के बेटे को मार डाला, बादशाह की आँखें ख़ञ्जर से निकाल डालीं। आख़िर गुलामक़ादिर भी मारा गया। शाहआलम दोयम के बाद, इसका बेटा मुईनुद्दीन अकबर शाहसानी

तख़्त पर बैठा, बादमें सिराजुद्दीन अब्दुलज़फ़र पर बादशाहत का अन्त होगया, जोकि कैदी की अवस्था में मर गया। इस तरह सल्तनत (राज्य) मुग़लिया समूल नष्ट हो गयी। जिसके सामने सभी राजा हिन्दुस्तान के काँपा करते थे। उसका निशान संसार से मिटगया। हां शाहाने इस्लाम ने अपने चालचलन, और अपने रहन सहन से जो ज़हरीला असर भारतवासियों पर डाला, उसका फल अभी तक लोग भुगत रहे हैं। लखनऊ के नवाबों ने रही सही कसर निकाल डाली और व्यभिचार और कुकर्मों को हद तक पहुँचा दिया। आख़िर वह भी नरक को सिधारे अब क्या बाक़ी है सिर्फ़ ज़हरीला असर जोकि मुसलमान बादशाह अपनी बदनामी कोयादगार में छोड़ गये हैं, और बस ऊपर लिखे हुए थोड़ों से वरकों को पढ़ कर मैक्समूलर की हैरानी का जवाब काफी मिल सकता है। आखिरकार इसलामी समय में भारतवासी बहुत ही गिरे, चुनान्चे इस गिरावट के चिन्ह अभी तक बाकी हैं और मुद्दत तक बाकी रहेंगे। इन चिन्हों का ज़िकर हम अगले काण्ड के लिये छोड़ते हैं। जब कि हम यह दिखायेंगे कि मुसलमानों के इस अन्याय कुकर्म और नृशंसता का कारण क्या था।